रग नाम सत्य है

सगीता शर्मा
2 व 6 पवनपुरी कालोनी
सेक्टर 2 हाउसिंग बोड
बीकानेर 334001 (राज०)

रंग नाम सत्यं है

दयानन्द शर्मा

कृष्ण जनसेवी एण्ड को0, बीकानेर

प्रकाशक कृष्ण जनसेवी एण्ड को०,
दाऊ जी मन्दिर
बीकानेर 334001

प्रथम सस्करण 1992

मूल्य 48 00 रुपये

मुद्रक एस० एन० प्रिंटस,
नवीन शाहदरा दिल्ली 110032

समर्पण

सादर समर्पित वैज्ञानिक पिता डा० सतीश चन्द्र
और ममतामयी मा श्रीमती मनोरमा देवी को।

अपनी बात

यह नाटक छोटे शहरो मे पनप रहे उन अनेकानेक रगकर्मिया के लिए है जो साधन-सुविधा और अर्थ की तमाम पेचीदगिया से जूझते हुए शैवाल की तरह जीते और हिन्दी रगमच को जिलाते आए हैं। हिंदी रगमच को जिन्दा रखा है इन्ही अनाम, गुमनाम, यश और अपयश के भागी शौकिया रगकर्मियो ने जो जहा एक ओर आधुनिक ताम-झाम और चमत्कारिक तकनीक और नित्य बदल जाने वाली अबूझ शलियो से अनभिज्ञ रहते हैं वही दूसरी ओर छोटी-मोटी नगण्य-सी सहायता के लिए अकादमियो प्रभागो और अन्य तथाकथित सरकारी विभागा के कुछ नितात प्रतिभाशून्य, असाहित्यिक, अल्प शिक्षित कला के तथाकथित ठेकदारा की कृपादष्टि के मोहताज बन रहते हैं।

मैंने इस नाटक मे रगमच और रगकर्मियो के राजनतिक और सामाजिक समस्याओ को आम बोलचाल की भाषा म प्रस्तुत किया है ताकि यह एक आम दशक को भी मच से परिचित करवा दे। मेरी कोशिश रही है कि रगकम की कोई जटिलता दशको को बोझिल न करे और न ही यह कहीं से भी अतिनाटकीय बन जाये। रगकर्मिया क च द नितान्त व्यक्तिगत स्वाभाविक प्रसगा को भी इसी उद्देश्य स छेडा गया है। मेरा उद्देश्य अपन रगदशको का शिक्षित करने का तो है ही साथ ही उन जिद्दी और लडाकू थियेटरकर्मियो क उत्साहवधन का भी है जो उन तमाम ताकता से भरसक दम तक सघष करते हैं जो उन्हें मजबूर करत हैं थियेटर छोड देने के लिए। वो कारण एक या कुछ व्यक्ति हो सकते हैं एक समूह हो सकता है या फिर कुछ परिस्थितिया हो सकती हैं। ये बातें मैंने गोष्ठियो, सेमिनारो या फिर साहित्य से नही झटकी हैं, य मुझे मिला है रगकम से। एक अच्छा निर्देशक, एक ट्रेड एक्टर या ऐक्ट्रेस एक अच्छा रगकर्मी भी हो यह कतई जरूरी नही है—अन्तर है समपण और प्रतिभा की, अवसर और निष्ठा की। कुछ रगबधु राजनतिक आस्था पालत हैं, उनसे मेरा व्यक्तिगत अनुरोध यह समझ

लने की है कि रगकर्म अपने आप म ही एक मिशन है एक आन्दोलन है—हर अन्याय की खिलाफत करने का एक अचूक प्लेटफाम है हमारे पास—आइए हम सकल्प लें एक खूबसूरत और जरूरी विधा को जिन्दा रखने की।

इस नाटक को पूरा करने म काफी समय लगा—तकरीबन आठ साल। देश के दूर-सुदूर रगप्रेमियो से इस नाटक पर बहस चर्चा हुई। कई जगह वाचन हुआ—हर बार कुछ-न-कुछ जोडा-तोडा गया—देश की राजनतिक स्थितिया उलटती-पुलटती रही—जब बार-बार यह महसूस होने लगा कि देश के हालात घूम फिरकर मेरे इस नाटक म फिट हो जाया करते हैं तो सोचा कि हिन्दी भाषी क्षेत्रो म इसके मचन के लिए इसका प्रकाशन जरूरी हो गया है।

मुझे सुअवसर मिला है कि मैं सवश्री तुनो महत (मेरे प्रथम गुरु), स्वतत्रता सग्राम सेनानी रामावतार सिंह (पूज्य नाना), स्वर्गीय (डा०) श्रीमोहन (डा०) विनय, विजय अमरेश, (डा०) विलास गुप्ते प्रदीप भटनागर, वागीश कुमार सिंह, कृष्ण मुरारी परवेज अख्तर निर्मोही व्यास, एल० एन० मानी एस० डी० चौहान जगदीश सिंह मगल सक्सेना (डा०) सुशील कात सिन्हा (डा०) पकज गोस्वामी, आशुतोष कोठारी, शिवकुमार सजय राही, एन० के० सिंह तरुण गौड, आनन्द आचाय और सगीता (पत्नी) का पूरे स्नेह और सम्मान के साथ आभार प्रकट करू जिनकी निकटता से मैंने कुछ सीखा है जिनके कारण मैंने थियेटर किया है और जिन्होंने मुझे अपनापन दिया है। यह अवसर है उन अनगिनत थियेटर कर्मियो को स्मरण करने का जिनसे मैं रगकम की वजह से कभी ना कभी जुडा रहा हू उन सभी स्वधर्मियो को मेरा प्रणाम।

—दयानन्द शर्मा

पात्र परिचय

पुरुष-पात्र	स्त्री-पात्र
रंगकर्मी	प्रेरणा/मां/लड़की/
छोटा बच्चा	अभिनेत्री/स्त्री
क्रांतिकारी	
कवि	
पत्रकार	
न०—1	
न०—2	
न०—3	
न०—4	
न०—5	

नोट—आवश्यकतानुसार एक ही अभिनेत्री पाचा स्त्री पात्रा का अभिनय कर सकती है। उसी प्रकार न० 1 से न० 5 तक के अभिनेता सारे पुरुष पात्रो का अभिनय कर सकते हैं। अलबत्ता भीड के लिए कुछ लोगो की आवश्यकता होगी।

[बिना किसी औपचारिकता के नाटक दशक-दीर्घा मे ही शुरू हो जाता है।]

व्यक्ति 1 और भई कलाकार ! क्या हाल हैं तेरे ? आजकल ठंड पी गई क्या तेरी नाटक कम्पनी।

रंगकर्मी क्या भाई क्या ?

न० 1 कोई नाटक-वाटक नहीं कर रहे हो दीखता, तभी पिछले साल से काड-पास आना ही बन्द है।

रंगकर्मी काड-पास भेजना बन्द कर दिया है सस्था ने इन दिनो।

न० 1 अच्छा-अच्छा, बडा भाव बढ गया तुम लोगा का। देख यार पिछली बार काड भेजने पर भी नही आ पाया इसलिए तू बुरा मान गया होगा। यार, तुझे क्या बताऊँ उस दिन पडोसियो ने वी० सी० आर० मगाया था।

रंगकर्मी नही यार, बुरा मानने की क्या बात है इसम। दरअसल सस्था के लोगा ने सोचा और फैसला किया कि नाटक एसे लोगो के लिए ही किया जाय जो नाटक देखने के लिए टिकट खिडकी तक आयें।

न० 2 फिर तो कर लिया तुमने नाटक अरे ऐसा भी कही हुआ है ?

रंगकर्मी हुआ नहीं, होता है। विदेशा की बातें छोड भी दो तो अपने ही देश मे—महाराष्ट्र मे बगाल म और अब दिल्ली मे भी।

न० 2 अरे, उनकी बातें कुछ और हैं, तू तो अपनी बात कर।

न० 3 (यह व्यक्ति पुलिस की वर्दी म है) है कोई माई का लाल जो पुलिस को वर्दी देखकर भी टिकट को पूछ ले ? रेल हो या बस सकस हो या फिल्लम—टिकट के लिए नही पूछा कभी किसी ने। और तेरे नाटक की टिकट लूगा मैं ?

रंगकर्मी एक आपके देखने या न देखने से कुछ नही बिगडने वाला फिल्म वालो का हवलदार साहब, लेकिन आप तो जानते हैं कि नाटक वाल ।

न० 4 खूब जानते हैं। लूटो खूब लूटो और नाम दो समाज-सेवा का। टिकट लेकर नाटक दिखाओग तो खूब हागी समाज सवा।

रगकर्मी किस नाटकवाले ने आपको कह दिया कि वह समाज-सेवा करता है। और सभी नाटक टिकट पर ही नही होत ? जो लोग हमारा नाटक देखने हम तक नही पहुच पात हैं उन तक हम खुद पहुच जाते हैं।

न० 3 हा-हा पता है। वो चौधरी का बेटा और उसकी मण्डली (सिर खुजाकर) भाइयो और बहनो क्या कैवें उसको ?

समूह नुक्कड नाटक।

न० 3 हा नुक्कड नाटक।

न० 1 नाटक वो भी नुक्कड पर साला।

न० 4 थान म हो तो कोई बात है नुक्कड पर भी नाटक साला।

[समूह रगकर्मी का उपहास करता है। रगकर्मी इशारों से उन्हें समझाने का प्रयास करता है किन्तु असफल होकर दशक दीर्घा से मच पर चला जाता है

कोई छोटा बच्चा दशको के बीच से उठकर टिकट की गड्डी हवा में लहरा रहा है। वह दशको के बीच से गुजरता हुआ दशकों के सामने रखे मेज पर पहुच जाता है। उसके पीछे-पीछे दो अन्य लड़के विचित्र वेशभूषा मे कोई डिस्कोनुमा भोण्डा नत्य कर रहे ह।]

छोटा बच्चा हा तो जनाव दो रुपये का टिकट है, दो रुपये साब। आज के जमाने म दो रुपये की क्या कीमत है साब ? दो रुपये मे आधा किलो आटा नही आता साब पाव भर दाल नही आता साब। महगाई ने काट खाया दो रपये म कुछ नही आया। लेकिन आया-आया-आया साब, दो रुपये मे फुल लेंग्थ नाटक। इस नाटक ने शो होने से पहले ही खूब धूम मचाया है साब इस नाटक के लेखक को लोअर कोट ने छ महीने का सजा दिया हाईकोट ने बाइज्जत बेइज्जत किया लेकिन सुप्रिम कोट ने दिया आडर स्टे, अब होने जा रहा है आपके सामने 'फुल लेंग्थ प्ले।

[नाचने वाले लडकों मे से एक अपना नाच जारी रखते हुए ही पूछता है—क्या राइटर, क्या डायरेक्टर, क्या एक्टर ? क्या नाम बताया ?

छोटा बच्चा कुत्ते की पूछ सीधी हो गई।

[दूसरा नाचने वाला लडका उसी तरह—क्या फाईटिंग, क्या सस्पेंस, क्या डिरामा ? क्या नाम बताया ?]

छोटा बच्चा कुत्ते की पूछ सीधी हो गई।

दोनो लडके और इस नाटक की हीरोइन।

न० 1 भैया, जरा दो टिक्ट आग की सीट का दना।

छोटा बच्चा हमारे यहाँ एक ही रेट है साब, आगे का लो या पीछे का।

न० 2 और ऊपर का ?

छोटा बच्चा अभी से ऊपर जाने की वात क्या करता है भाइ अभी तो नाटक शुरू भी नही हुआ। हा तो अकल, कॉमेडी ट्रेजेडी, गीत, सगीत और मारधाड से भरपूर पहला धमाकेदार नाटक केवल दो रुपय म। मैं पहले कहे दे रहा हू साब काउन्टर पर पुलिस की व्यवस्था नही होगी उस दिन, शहर म मत्री जी आ रहे हैं, पुलिस उनकी रक्षा करेगी या आपकी सुरक्षा ? यह नाटक तो 'हाउसफुल हो गया समझो। बाबू भया-बहना-मैया, सब-के-सब आओ सौ रुपये के टिक्ट को दो रुपये मे ले जाओ।

[एक दशक उठकर छोटे लडके के पास आना चाहता है उसका मित्र उसकी बाह पकडकर रोकता है।]

न० 5 अरे, पागल हो गया है! ये तो ऐसे ही वक्ते रहत हैं नाटक के लिए दो रुपये खच करेगा!

छोटा बच्चा दो रुपया क्या चीज है साव। दा रुपया तो आप बाबू लोग बीडी पीकर फूक दत हैं, पान खाकर थूक देत हैं चाय पीकर मूत दते हैं। हा तो बाबू लोग दो रुपय तो हाथ का मैल भी नही है जिस देने म कष्ट हो।

[न 2 और 3 आते ह और छोटे बच्चे की बाह पकडकर एक ओर ले जाते ह।]

न० 2 अबे ओ हरामी का पिल्ला! नाटक की टिक्ट बच रहा है या इलाहाबाद के अमरूद!

छोटा बच्चा बिगड क्या रहे हा उस्ताद तुमन ही तो कहा था कि पूरी गड्डी म एक भी टिक्ट वापस लाया तो नाटक म स राल काट दूगा।

न० 3 कहा था तो अपन जान-पहचान वालो के यहा बेचता, यहा सरे आम कितनी बेइज्जती कर दी तुमन नाटकवाला की।

छोटा बच्चा मैंने कौन-सा गला काट लिया किसी का अपने माल का प्रचार ही ता किया है। हा थोडा बहुत झूठ वाला है तो कौन है यहा महात्मा गाधी का अवतार? पूछो पूछो इनसे लोग आखें रहत हुए भी क्या अधे बन जात हैं जब कोई इनम चिकनी चुपडी बातें

कर इनका सारा अधिकार छीन दिल्ली भाग जाता है। वो साला दुष्यन्त और हम सारी जनता शकुन्तला, उनके नाम की अगूठी पहन प्रजातन्त्र की नाजायज औलादो का लालन-पालन करें ?

रगकर्मी पहले नाटक म ही पक्का सरकार विरोधी हो गया है बेटा। खैर, छोड। य बता इन लोगो को यह बहूरूपा नाच करने को किसने कहा था ?

छोटा बच्चा डेली वेजज पर काम कर रहे हैं बचारे। हर टिकट पर दस पैसे कमीशन और अगले नाटक म काम दिलाने का वादा।

रगकर्मी अपनी फिक्र कर, लोगो का काम दिलायेगा।

छोटा बच्चा अरे नहीं उस्ताद लोगो को उल्लू बनाना है। मेरी मानो तो हर नाटक म एकाध डिस्को ठूस दो ब्रेक डास डाल दो। सीटिया नही बजें तो नाम बदल देना चाहो तो एकाध आलतू-फालतू सीन ड्राप कर दो।

रगकर्मी लेकिन हमने तो पूरा नाटक ही ड्राप कर दिया।

छोटा बच्चा क्या उस्ताद ? फिर से कहना जरा।

रगकर्मी हा हा हमने ड्राप कर दिया नाटक।

छोटा बच्चा अरे, मर गये। अब तो यहा स खिसक चलो बच्चू वर्ना सर पर एक बाल नही बचेगा। (रगकर्मी से) लेकिन क्या ? सब तयारी जब हो गई थी, रिहर्सल करीब करीब पूरा हो गया था, पोस्टर लग गये, टिकटें भी कुछ बिक गइ, फिर आखिरी वक्त म तुम्हे क्या सूझा ?

रगकर्मी हा मैंने ही छोड दिया आखिरी वक्त म। क्या करता ? कब तक लोगो स झूठ बोलू ? कब तक समाज को बदल देने का ढोल पीटता रहू ? समझ म नही आता कि हमारे इतने कामो का फल मिलता किस है ? वर्षों बीत गए ना नाटक करने वाले सुखी हुए ना नाटक देखने वाले। ना ही कुछ बदला। नकी कर और दरिया मे डालू लेकिन यह दरिया दरिया नही समन्दर हो गया साला यह कभी नही भरगा।

छोटा बच्चा फिर क्या सोचा ? हम क्या करेंगे ? तुम क्या कराग ? जब नाटक ही नहा कराग तो अपने आपको बुद्धिजीवी कस साबित करोगे ? कस आधी आधी रात तक होटलो और काफी हाउस म बठकर चाय और काफी की चुस्किया म अपना और रगमच का भविष्य दखोगे ?

क्या कहते हैं उसको ? हा! कहा गई तुम लोगा की

महत्वाकाक्षाए ! डूब गइ या टूटकर बिखर गइ या दम तोड दिया उसने ? दफ्न क्यो नही कर देते उन्हे ?

रगकर्मी वो दफ्न नही हो सकती। हम सब कुछ नये सिरे से करना होगा, पुराने औजार फालतू थे, उन पर और मरम्मत नही हो सकती, न ही य मुनासिब होगा। (कहते हुए मच पर चला जाता है।)

छोटा बच्चा छ महीने तक विना तनख्वाह के नौकर जसा काम लिया, तब कही जाकर एक छोटा-सा रोल दिया था सस्था वाला न, वडी वडी बातें बतायी थी। मैं तो पहाड खोदने म लगा हुआ था, अपनी भी किस्मत देखिए चुहिया भी हाथ नही आयी। पर्दा उठने के पहले ही नाटक ड्राप हो गया हमारा। नमस्कार। फिर मिलेंगे। आपका श्री श्री। (अपना नाम बताता है।)

[मच पर पूर्ण प्रकाश। नाटक के समस्त पात्र हाल के विभिन्न कोनों से ,उठ-उठकर मच पर एकत्रित हो रहे ह। रगकर्मी आगे निकलकर आता है।]

रगकर्मी नमस्कार! आप सभी महानुभाव नाटक देखने आये हैं, मैं समझता हू इसे बताने की भी जरूरत नही थी कि आप नाटक देखने के लिए आये हैं। जाहिर है आप सभी अपना कोई-न-कोई महत्वपूर्ण काम छोडकर हमारे पास नाटक दखने क लिए ही आए हैं। और हम सभी मच पर आए हैं आपस कुछ बातचीत करने हम अपनी बात यदि सडको पर सुनाएग तो कोई ध्यान स नही सुनेगा किताबो-अखबारो मे छपवायेंगे तो उम बहुत कम लोग पढ पायेंगे। चूकि आप सभी लोग किसी-न किसी भावना स प्रेरित होकर और टिकट लेकर आए हैं तो दिल म जरूर कुछ-न कुछ अलग देखने की इच्छा भी साथ होगी। हम चाहते हैं कि आप अपने आख-कान मूदकर अपने सारे अधिकार हम ना सौंप दें जैसा आप लोग आम जीवन म करते आए हैं बल्कि हम चाहते हैं कि आप चाहे कि आपने जो हम इतना वक्त दिया उसके बदले म आपको क्या मिला ? आज का नाटक 'रग नाम सत्य है' कोई कहानी नही स्थितिया हैं। कोरा दद नही रग बिरगी *झाकिया हैं। तो सुधीजनो आइए सबस पहले मैं आपको अपने* अन्य साथियो स मिलवा दू। मैं खुद से ही शुरू करता हू। मैं

[बारी-बारी से मच पर उपस्थित तमाम रगकर्मी अपना अपना नाम बताते ह। इसमें तकनीकी काम सभालने वालों को भी शामिल किया जाना चाहिए।

छोटा बच्चा अपनी बारी आने पर कहता है मेरा परिचय पहले ही हो चुका है।]

रगकर्मी (परिचय के अत मे) और इस नाटक के लखक हैं दयानन्द शर्मा और इसका निर्देशन किया है ने।

न० 1 हम सबसे पहले आपको अपना प्यारा देश दिखायेंगे। फिर उसमे हम रगकर्मियो का परिवेश दिखाएगे।

[कलाकारों द्वारा समूहगान)

आओ लोगो दिखलाते हैं झाकी हिन्दुस्तान की
ईमान धरम सब चूल्हे म है
शासन है बेईमान की
टूट रहा इन्सान
डूब रहा किसान
असम म गोलीकण्ड
पजाब मे खालिस्तान।
महगाई की चाल ये देखो
जो घोडी को भी शरमाती है
हर साल का बजट ये देखो
जो घाटा ही दिखलाती है
बेईमानो की इस धरती पर
मुश्किल जीना इन्सान की
आओ लोग दिखलाते हैं
रगा बिल्ला काण्ड
गीता-सजय काण्ड
लका हत्याकाण्ड
कश्मीर म पाकिस्तान
यू० पी० का यह बेहमई देखो
जहा फूलन देवी उभरी थी
जे० पी० का यह पटना देखो
जहा चली था गालिया
एम० पी० के तुम डाकू देखा
देखो चम्बल की टोलिया
शरीफो का अब गया जमाना
चलती है शत्तान की
आओ लोगो दिखलाते हैं

गाधी हत्याकाण्ड
इन्दिरा हत्याकाण्ड
अयोध्या गोलीकाण्ड
राजीव हत्याकाण्ड

आओ हम सब दिल्ली दौडें
जहा घाट घाट का नेता है
सारे वादो के बन्दे
आश्वासन ही देता है
कुछ मत पूछो कितनी कीमत
मत्री के ईमान की
आठो पहर का बात यही है
सुबह की ना शाम की
आओ लोगो दिखलाते हैं

[प्रेरणा, क्रान्तिकारी, कवि और पत्रकार तथा रगकर्मी के अतिरिक्त शेष पात्र विग्स मे चले जाते हैं। मच पर उपस्थित चारों पात्रों के बीच किसी मुद्दे पर तनातनी की स्थिति आ गई है। अचानक]

क्रान्तिकारी हा-हा कवि सदस्य का कहना सही है। रगमच केवल रगकर्मियो के बाप का नहीं है। नाट्य सभा मे सभी सदस्यो का समान अधिकार प्राप्त है।

रगकर्मी आपको अक्तूबर क्रान्ति, लेनिन, मार्क्स आदि के बारे मे मुझसे ज्यादा जानकारी हो सकती है लेकिन रगमच की छोटी-से छोटी चीज भी अछूती है आपसे। पिछले साल अतर्राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के छैल भाई के वर्कशाप मे झाकने तक नहीं आये थे आप।

क्रान्तिकारी वही ड्रामा स्कूल के छैल भाई जो मसाला भरकर सिगरटें पीते हैं?

रगकर्मी क्या नॉलिज है उनकी ! चीजो पर क्या पकड़ है उनकी !

क्रान्तिकारी क्या पकड़ते हैं? मेरी जनरल नालेज भी उतनी वीक नहीं है जितनी आप समझ रहे हैं। नौटकी रम्मत, पारसी, ख्याल, मचान, कमाल धमाल

रगकर्मी अच्छा तो आप इतना ही बताइए कि फ्रीज किसे कहते हैं नाटक की भाषा मे?

क्रान्तिकारी (ठहाका लगाकर) मैं जरूर एक गरीब मा-बाप का बेटा हू लेकिन जब से राजनीति म आया हू इतना गरीब भी नही रहा कि फ्रिज जैसी छोटी-सी चीज़ के बारे म भी नही जानू। यह वह आलमारी जैसी बिजली पर चलने वाली चीज है जिसके बिना कितनी ही लडकियो की शादी रुक जाती है, जिसम साले पूँजीपति लोग हम गरीब भाइया के खून-पसीने से तैयार किया गया सामान देर तक ताजा रखते हैं। साले आइसक्रीम रखते हैं अंग्रेजी दारू रखते हैं साले, जब तब चिल्ड बीयर पीते रहते हैं साले

रगकर्मी कामरेड, तब तो आप इस इलेक्शन म ना ही खडे हो तो बेहतर है क्योंकि अभी तक तो आपको थियेटर का टी तक नही मालूम।

कवि ऐसा हुआ तो क्रान्ति होगी।

पत्रकार चारो ओर अशान्ति होगी।

प्रेरणा आप लोग चुप रहिए। (रगकर्मी और क्रान्तिकारी से) देखिए यह फैसला मैं करूगी कि मेरे अलावा कौन-कौन इस चुनाव म सभापति के पद के उम्मीदवार होंगे।

क्रा० और रगकर्मी तो क्या आप यहा भी आ गई हैं मैदान म? आपके बच्चो की कौन देखभाल करेगा?

प्रेरणा आखिर उन्हे कौन सा दूसरा रास्ता चुनना है? पंडित महात्मा का आशीर्वाद रहा तो थाम ही लेंगे किसी दिन देश की बागडोर। फिर राजनीति तो तीन पीढियो से चली आ रही है हमारे खानदान म अब देखो ना, जन्म ही किसी नये बच्चे का जन्म होता है बुढिया नौकरानी अपने पोपले मुह से कहती है "तुम देखना रानी साहिबा, राजकुमार जरूर एक न एक दिन देश के (हसने लगती है) खैर छोडो उन बातो को हम तो अभी अपनी कुर्सी की बातें करें।

[पाचों पात्रों म पुन एक दूसरे से मंत्रणा अत। मैं प्रेरणा विजयी कूटनीतिज्ञ की भाति अपने समर्थक कवि और पत्रकार के साथ बाहर चली जाती है। प्रकाश बुझ जाता है।]

दृश्य 2

[किसी रंग अभिनेता का घर। मध्य रात्रि का समय। दरवाजे पर दस्तक सहमे हुए हाथो से। दस्तक की आवाज धीमे धीमे तेज।]

न० 1 भाग जा आ भागो गाले ! नही खुलेगा दरवाजा। दिन भर कमाई करके आय हैं लाट साहब। घर पर सब नौकर बठे हैं आधी रात तक बाबू साहब का इन्तजार करने को।

[झटके से दरवाजा खुलने की आवाज। घूरती आंखें आगन्तुक को नीचे से ऊपर तक निहारती हु।]

अब खडे-खडे मेरा मुह क्या देख रहे हैं, आइए हुजूर। (डाटकर) अब आ ना।

[रगकर्मी का प्रवेश]

न० 1 खाना लगाकर रख दिया है तेरी मा ने, खा ले और सुबह तक फैसला कर लियो कि तू चाहता क्या है ?

[रगकर्मी जाने को होता है।]

न० 1 अबे, उधर नही इधर रसोई म रखा है खाना।

[लडका एक क्षण के लिए ठिठकता है। फिर उसी ओर जाने लगता है।]

रगकर्मी (सहमकर) जी, भूख नही है। जी, इच्छा नहीं है।

न० 1 क्या ? क्यो इच्छा नही है ? इच्छा तो मेरी भी नहीं है तुझ जैसे निकम्मे को खिलाने की, फिर भी खिलाता हू कि नहीं ? तुझे क्या नही है इच्छा ?

रगकर्मी बस ऐसे ही इच्छा नही है। रिहसल म दो बार चाय पी ली थी भूख मर गइ फिर साथ म कुछ खाने को भी मिल गया था।

न० 1 अच्छा तो अब खाने को भी मिलने लगा है तुम्हारे रिहसल म ? ठीक है, मत खा। हराम की कमाई का ही समझ इसे हो जाने दे बर्बाद लेकिन इत्ता बता दे कि तू चाहता क्या है ?

[रगकर्मी चुपचाप अपनी कमीज के बटन खोलना शुरू करता है।]

न० 1 अब ओ शेक्सपियर के नाती सुन रहा है मैं क्या कह रहा हू ?

रगकर्मी जी सुनता हू।

न० 1 मैं पूछ रहा हू तू चाहता क्या है ?

रगकर्मी (प्रसग बदलने के प्रयास में) *आज बाजार म ताई जी मिली थी, कल शाम तक 3000 रुपये भिजवा देंगी।*

न० 1 अब भाड म गई तेरी ताई जी। मैं तेरी ताई जी माइ जी के बारे मे नही पूछ रहा हू, बात बदलने की कोशिश मत कर। होगा एक्टर अपनी मण्डली का मैं तेरा बाप हू बाप ! एक दिन खाना बन्द कर

दिया ना तो मिनटा म भरत मुनि का भूत उतर जायेगा। सीधी तरह से बता दे कि कब छाडेगा तू नाटक करना।

रगकर्मी इस नाटक के बाद नौकरी मिलने तक कोई और नाटक नही करूगा।

न० 1 य तो तू पिछले पाच साल स कहता आ रहा है।

रगकर्मी आपको जब पता है तो बार-बार पूछन ही क्यो हैं!

न० 1 (चीखकर) हरामजादे आज बताता हू तुने! (अपनी छडी ढूढने का प्रयास करते हुए) अरे, मैं पूछता हू इसलिए कि तरे इस नाटक न तरा नही, मेरा भविष्य अधकारमय कर दिया है।

[चीख-पुकार सुनकर मा का प्रवेश। न० 1 की पत्नी और रगकर्मी की मां है। पीछे-पीछे एक छोटा लडका भी बसाखियों के सहारे चला आ रहा है। मच के पिछले हिस्से के मध्य मे आकर वह रुक जाता है। मां रगकर्मी को बचाने की कोशिश मे खुद चोट खा जाती है। न० 1 अपनी छडी फेंककर वहीं पास रखे स्टूल पर पसरने लगता है।]

मा अच्छा तो अब आया है। मैंने तुझे कितनी बार कहा है कि एक बार कोई काम धधा कर ले, फिर जा जी म आये सो कर हम क्या फिकर? (नम आवाज) फिर रात रात भर नाच-नौटकी करियो! हे भगवान! और कितन नाटक दिखायगा तू—एक तरा, एक इसका।

न० 1 इसको तो यही लगता है कि बाप के पास रुपये का पेड लगा है चाहे जितना ताड लो।

[मा रगकर्मी को एक कोने में ले जाती है।]

न० 1 नाटक करन चल हैं हमने जस कभी नाटक किया ही नही है। दशहरे म रामलीला हुई तो बन गये छुटपन म एक बार राम, तीन बार कुम्भकरण कर लिया शौक पूरा। य क्या नाटक साला कि सारे काम धाम छोडकर उसम ही पिले रहो। अरे, फिल्मो म जाने का इतना ही शौक है तो साफ-साफ क्यो नहीं कहता तेरी मा के बचे खुचे गहने बेचकर तेरा बम्बई का रिजर्वेशन करवा दू?

रगकर्मी मैंन आपको कितनी बार कहा है पिताजी कि हम लोग फिल्मो मे जाने के लिए नाटक नही किया करत।

न० 1 कहने तो सब यही हैं मौका मिलने ही फूट चलत हैं। तरे कित्ते दोस्त गये फिल्मो म पहल तरे से कम नम्बर दत थे क्या वो? अर अपनी अपनी किस्मत होती है और मुझे तरी किस्मत पर कोई

भरोसा नही। चुपचाप टाइप वाप्प सीख और क्लक ग्रेड की तयारी कर नही तो उम्र निकल जायेगी तो चपरासीगिरी के भी लाल पड जायेंगे।

रंगकर्मी आदमी विचारा से बडा होता है पिताजी।

न० 1 ये डायलाग अपने नाटक वाला को ही सुनाना। आदमी विच्चारा स बडा होना है पित्ताजी! अरे, बिना हाथ पर हिलाये बाप की कमाई नाटक म झोकन को मिल जाती है तो क्यो नही करेगा आचार विचार की बात! रहन दे ये अपना आचार विचार, सो जा। और हा सुबह तक बता दिया कि तू चात्ता क्या है'

मा (रंगकर्मी से) आज बरेली वाल सक्सना जी आये थे, बोल रिये थे लडका नाटक नौटकी म बिगड रिया है। समय रहत सुधार लो नहीं तो हम लडकी का रिश्ता मजबूर होकर तोडना ही पडेगा। (धीरे से अलग ले जाकर) तभी से गुस्से म काप रट् हैं तरे बाऊजी।

रंगकर्मी तुम लागा को कहा किसने था एक बरोजगार आदमी का रिश्ता तय करन को।

मा अरे वाह पचास हजार नक्द और आठ ताला सोना लडकी के कपडे-लत्ते स्कूटर-फर्नीचर अलग स, एसा रिश्ता भी कही ठुकराने लायक होता है!

रंगकर्मी और उसी लालच म एक ऐसी लडकी क लिए हामी भर दी जो आठवी मे तीन बार और नवी म चार बार फेल हो चुकी है।

न० 1 अरे तो क्या हुआ बडे लाग हैं खानदानी लोग पढाई म कमजोर होन ही हैं। तूने एम० ए० करके ही कौन-सा तार मार लिया, आज तक इण्टरव्यू लेटर तक के तो दशन हुए नही हैं।

मा मेरी तो समझ म नही आवे कि लडकीवाला को तरे नाच नौटकी की भनक लगी कम?

न० 1 क्या? रात रात भर पोस्टर चिपकाता नही फिरता तरा लाडला! (रंगकर्मी से) तू तो इत्ता बता दे कि तू चाता क्या है?

रंगकर्मी (ऊबकर) आप क्या चाहत हैं?

न० 1 मैं चाहता हू कि तू इत्ता बता दे कि जो लगा तू रोटी के बगर? दे देंगे रोटी तुझे ये नाटकवाले?

रंगकर्मी ये तो आप रोज ही पूछते हैं।

न० 1 आज फिर पूछ रहा हूँ क्योंकि तू जित्ता नाटक क बारे म सोचता है ना उसग आधा भी रोटी क बारे म सोचता ना तो इस उमर मे ओवर टेम नहीं करना पडना मुझे! दवाइया के बगर पर टेके

नही रहन तेरे छाटे भाई व दहेज व वारण जलवर नही मर गई हाती तरी वहन।

रगकर्मी लकिन यह तो घर घर की वहानी है मैं समझता हू कि मैं यदि नाटक नही भी करता तो भी ये सब होना ही। रगमच के जरिये हम समाज स सीधे सीधे जुड हुए हैं इसलिए हम थोडा-बहुत वलिदान ता करना ही होगा।

न० 1 थोडा-बहुत क्यो, आग लगा दे अपन घर म और वर द चौराह पर रोशनी ! कलाकार है ना अपन घर क सिवा सारी दुनिया की फिक्र है तुम्ह ?

मा (न० 1 से) मैं तो कहूजी इससे तो बहस करो ही मत पक्का समाज का उद्धारक बन गया है य अब तो। मैं तो कहू कि ये सब सगत का असर है, इसके सब यार-दोस्त एमी ही बहकी-बहकी बातें किया करें।

न० 1 कल से कोई आये तो मना कर दो कह दो कि यह एक शातिप्रिय आदमी का घर है कोई समाज-कल्याण का दफ्तर नही।

[रगकर्मी जो अब तक अपनी कमीज उतार चुका है उसी लापरवाही से कधे पर फेंकता हुआ बाहर चला जाता है। प्रकाश वस्त छोटे लडके की बसाखियों पर पडता है। मां की आवाज उभरती है— हे मा सरस्वती लडके को सदबुद्धि दो पढ लिखकर बिगड गया है। प्रकाश बुझ जाता है।]

दश्य 3

[नाटय सभापति हतु चुनावी सरगर्मिया। रगकर्मी क्रातिकारी और प्रेरणा बारी बारी से दशकों को सम्बोधित करेंगे। मच पर तीन ऊचे प्लेटफाम तीनों नताओं के भाषण के लिए ह सामने दर्शकों की ओर पीठ करके कुछ व्यक्ति बठे हुए ह।]

रगकर्मी (अपना भाषण समाप्त कर रहा है।) मुझ बस इतना ही कहना था कि आप ध्यान रखें कि चुनाव नाटय सभापति क पद के लिए हो रहा है इसलिए आप ऐसे उम्मीदवार को ही चुनें जिसको नाटक के बारे म कुछ अता-पता हो। एक हमारे कामरेड हैं जिनको फ्रिज और फ्रीज का अतर भी नही मालूम।

भीड म स आ० अर यह ता हमार मजदूर नता की वेइज्जती कर रहा है।
दूसरी आवाज क्या सचमुच बेइज्जती कर रहा है ? क्या कह रहा है वो ?
पहला आवाज देखा नही, कह रहा था कि कामरेड को कुछ आता-जाता नही।
तीसरी आवाज सच ही तो वह रह हैं कि कौन नही जानता कामरेड की हिस्ट्री जाग्रफी।
पहली आवाज आप चुप रह जाइए आपसे नही पूछा जा रहा है कुछ।
तीसरा आवाज भया, गलती हुई अब नही बोलूगा कुछ। लेकिन भइया मजदूरो की भलाइ क लिए जितना आपके कामरेड न किया उसस कही अधिक इस रगकर्मी न किया है।
चौथी आवाज मजदूर समस्या पर खब नाटक किया है लकिन दिखाया है मिल मालिको और सरकारी अफसरान को।
पहला आवाज अजी इसकी हकीकत ता मुझस पूछो, लम्बरी अय्याश है। शादी क डेढ वरस बाद ही बीवी को तलाक द दिया।
दूसरी आवाज अजी, दजनों मिल जाती हैं नन लडान को नौटकी म दजनो, फिर घर की बीवी को कौन साला पूछे ?

तीसरा एसा !

दूसरा एसा !

चौथा तो भगाओ साले को।

भीड रगकर्मी हाय-हाय !
नाटकवाला हाय-हाय !

रगकर्मी (*तेज आवाज*) मेर देश के नाटक प्रेमियो, मैं जानता हू कि य हाय-हाय आप किसके इशारो पर कर रह हैं केवल एक बार आप मुझसे सुन तो लीजिए।

पहला तेरे-जस तीन सौ छप्पन रगकर्मी मेर आगे-पीछे घूमत हैं।

रगकर्मी दखिए यह देश की राजनीति का सवाल नही है सवाल है सस्कृति का। मैं वर्षों स अब तक रगमच की ही सेवा कर रहा हू इसलिए नाट्य सभापति की कुर्सी पर मेरा हक बनता है। बचपन मे ही नाटक कर रहा हू।

एक आवाज पदा भी स्टेज पर ही हुआ था क्या ?

रगकर्मी (*सहज होने का प्रयत्न करते हुए*) *दखिए यहा आन से पहल लोगो* न हम डराया था कि वहा की जनता किसी की नही सुनती लेकिन आप लोगो के प्यार को देखकर यहा लगता है कि यहा से अधिक सभ्य जनता तो दुनिया मे कही की नही है।

[भीड मे से एक आदमी उठकर]

आदमी य लो ! य तो मिनिस्टर बनन स पहल ही सारी दुनिया घूम आया कोई लाटरी खुली थी क्या भया ?

[भीड़ का ठहाका]

रगकर्मी मैं आप लोगा क लिए उस हाल को खुलवा दूगा जो वर्षों स पुलिस वाला का डरा बना हुआ है।

भीड़ सरकार यह गलती कभी नहा करगी। नाटक क हाल म नाटक होन लगेंगे तो पुलिसवाल शराब कहा जाकर पीयेंगे ?

न० 1 सरकार का यह मानना है कि यह हाल विवादास्पद है और जब तक अदालत यह तय नहीं करती कि इस बुद्धिजीविया को सौंपा जाए या मजदूरा का, यह पुलिस के अधीन रहेगी। ना तो इसम ग्रीक नाटक होगे और ना ही रमी।

रगकर्मी मैं आज भरी सभा म, इतन लोगा की मौजूदगी म यह शपथ लेता हू कि मैं इस शहर क विवादास्पद हाल म लोक-नाटक करवा कर रहूगा। आप सबा का ध्यान होगा कि इस हाल का नकली इण्टेलक्चुअल्स क चगुल स छुडान के लिए मैंने गाधी रोड म अम्बेडकर नगर तक की पदयात्रा की है और हमारे मनीफैस्टो म यह साफ-साफ लिखा है कि विदेशी नाटक करन वाला क लिए हमारी अकादमी म कोई जगह नही होगी—मजदूरो को न्याय दिलान क लिए नाटक कवल मजदूरा क लिए किया जायगा।

भीड़ नहीं चाहिए ! हम आपस म लडवाकर न्याय दिलान वाला म सतक रहना चाहिए ये अवसरवादी हमारी आड म अपनी रोटी सेंकना चाहत हैं।

रगकर्मी आप लोग चाहग तो कुछ नाटक बुद्धिजीविया क लिए भी किय जायेंगे। लाइब्रेरी होगी हर घर के कम स कम एक कलाकार को एक टी० वी० सीरियल म काम या फिर कलाकारी भत्ता दिया जायगा।

भीड़ नहीं चाहिए—नही चाहिए।

रगकर्मी तो आप लोगा को क्या चाहिए ?

भीड़ आप यहा स चल जाइए।

रगकर्मी लखक निर्देशक अभिनताओ और मर प्राणा से भी अधिक प्यारे मरे दर्शको श्रोताओ ! तो मैं यह मानकर चलता हू कि यहा का एक वोट भी मर विरोधियो को नहीं मिलेगा।

भीड़ अबे जाता है या नही

[रगकर्मी जल्दी से अपना थला सभालता हुआ बाहर चला जाता है। पष्ठभूमि से कामरेड की जय-जयकार की आवाजें आ रही ह। भीड में हलचल।]

1 वो देखो कामरेड आ गय।
2 साथ म अपन छाटू कामरड भी हैं।
3 दखो कितनी ईमानदारी टपक रही है चेहरे से।
4 अरे, मजदूरो का नेता है कोई भेड-बकरी का नही।

[क्रांतिकारी के साथ छोटू कामरेड का प्रवेश। भीड तालियों से उनका स्वागत करती है। क्रांतिकारी अपने हाथ के इशारे से उ हें रुकने का आदेश देता है। भीड बिलकुल शात हो जाती है।]

क्रान्तिकारी कामरेट लाल सलाम। इससे पहले कि मैं अपने दिल के टुकडों से दो-चार बातें करू, मैं चाहता हू कि आपम म कोइ शोर न करे।

छोटू कामरेड आप म मे कोई शोर न करे।

[भीड का प्रत्येक व्यक्ति उठकर अपने पास के व्यक्ति से कहता है—आपमें से कोई शोर न करे।]

छाटू कामरेड चोप्प कामरड।

[भीड शात हो जाती है।]

क्रान्तिकारी मजदूर भाइया महनत मजदूरी करने वाले अनपढ-गवार और अभावग्रस्त महनतकश गरीब भाइयो! मैं बातें करता हू कम और काम करता हू ज्यादा। साफ-साफ कहू तो मुझे लच्छेदार बोलना आता ही नहीं। मैंन अपन छोटी-सी पालिटिकल लाइफ म जिन शब्दो को बार-बार-सुना है व हैं—लाल सलाम, सवहारा बुजुआ साम्यवाद आदि-आदि। मजदूर भाइया सच कह दू।

भीड सच कह दो कामरेड, आज सच कह दो।

छाटा कामरड लकिन आपमे स काइ शोर नहीं कर।

भीड (बारी-बारी से) लेकिन आपम स कोई शार नही करे।

छाटा कामरड चाप्प, कामरड।

[भीड शांत हो जाती है।]

क्रान्तिकारी मजदूर भाइयो सच कहू ता मुझे किसी वाद से कोइ खास लना दना नही था। जब जिसको जरूरत पडती थी सौ-दो सौ रुपय म बुलाकर ल जात थ लेकिन जसा कि पार्टी-पालिटिक्स मे होता आया है लोगो न दखा-दखी मुझे भी कामरेड कहना शुरू कर दिया।

सच कहता हू, आज भी बहुत अच्छा लगता है कामरेड कहना और सुनना। आप सबा को भी लगता होगा। कामरेड कहना और सुनना क्राति की पहली सीढी है।

[भीड के व्यक्ति एक दूसरे से 'है लो कामरेड हैलो कामरेड' कहते ह।]

छोटा कामरेड चोप्प कामरेड।

क्रान्तिकारी तो मैं इस तरह हो गया कामरेड। क्रान्तिकारी किताबें पढना मेरे लिए फशन हो गया। बचपन म आठ किलास स ज्यादा पढ नही पाया था। हुआ या था एक दिन एक मास्टर के सिर की मालिश करने से इनकार कर दिया था मैंने। लगा साना मा-बहन की गालिया बकने।

न० 1 कौन गधा था वो, कामरेड ?

न० 2 कौन साला था वह मास्टर एक बार केवल नाम बता दो उसका।

न० 3 अरे सालो बक-बक मत करो भापण सुनने दो।

न० 4 कौन साला मुझको साला कहेगा।

छोटा कामरेड चोप्प कामरेड।

[भीड चुप हो जाती है।]

क्रान्तिकारी आप ही बताइए कि क्या मा-बहन की गाली सुनने से खून नहीं खौलता है ? मैं आदमी हू कोई हिजडा नही दिया साल को उठा कर एक पटका। आज तक आग के दो दात टूटे हुए हैं।

[कवि और पत्रकार दोनों आकर श्रोताओं की भीड मे शामिल हो जाते ह और भीड के प्रत्येक व्यक्ति को अपना पजा दिखलाते हुए पाच रुपये प्रति व्यक्ति का लालच देते ह। भीड मे कानाफूसी शुरू हो जाती है।]

छोटा कामरेड कामरेड इतनी अच्छी-अच्छी बातें बता रह हैं और आप ध्यान नही द रहे।

न० 2 हम यहा कामरेड की आत्मकथा सुनने नहीं आये हैं। नेताओ का भूत हम अच्छी तरह मालूम है। अच्छा होगा हमस कामरेड की पोल मत खुलवाओ। नाटक के सिलसिल म आये हो नाटक की बात बताओ।

छोटा कामरेड चोप्प, कामरेड।

न० 2 चोप्प चमचा।

न० 1 अबे जो गद्दार अपने ना पर विश्वास नही है ता निकल जा यहा से। भाषण के बीच म टाग मत अडा, अनुशासन का ख्याल कर।

न० 2 मुझे कामरेड स केवल एक सवाल पूछना है।

न० 1 पार्टी मीटिंग म पूछना।

न० 2 नही इतने सारे लोगो के बीच मैं इसकी पोल खोलकर रहूगा।

[भीड उत्तेजित होकर दो वर्गों मे बट जाती है।]

क्रातिकारी मैं खुद खोल रहा हू अपनी पोल। हा, यह सच है कि पहल सिनेमा की टिक्टें ब्लक किया करता था मैं। चरस, गाजा भाग, अफीम सब वेचा करता था मैं। लेकिन जब से पार्टी का मेम्बर बना किसी छोटे काम म हाथ नहा लगाया। अपने देश की सवा की है मैंने, मुहल्ले की सेवा की है मैंने सच्चे क्रातिकारी की तरह रोज रोज दारू पीना भी छोड दिया है मैंने। विना रुक जन गण मन अधिनायक जय हे गा सक्ता हू मैं। मुहल्ले की औरता और छोकरियो पर बुरी नजर रखने वाला की आखें निकाल सक्ता हू मैं। सडक छाप मजनुओ और गरीब भाइयो म नई चेतना लाने का जुगाड करना यदि बुरा है लो मैं दुनिया का सबसे बुरा आदमी हू।

न० 2 कामरेड मैं यह नही कहता कि आप बुरे है। मैं तो इतना जानना चाहता हू कि जमीन के नाम पर जो पसा तुमने हम मजदूरो स लिया था, उस जमीन का क्या हुआ?

क्रातिकारी और अखवार के नाम पर तुमने जो हजारा रुपये का चदा लिया था उसका क्या हुआ?

न० 2 झूठ मत बोलो तुम्हारा हिस्सा पहुचा दिया गया था।

क्रातिकारी तो तुम्हारा हिस्सा भी पहुचा दिया जायगा।

न० 2 मैं तुम्हारी तरह बईमान नही हू जो मजदूरो का पसा लेकर अपना बगला बनवाऊ।

[भीड अचानक कामरेड के विपक्ष मे नारे लगाने लगती है— कामरेड हाय हाय, सोम प्रकाश हाय हाय क्रातिकारी वापस जाओ आदि।]

क्रातिकारी मेहनतकश मजदूर भाइयो पसा के लालच ने तुम्हारी मति भ्रष्ट कर दी है। अगर रगमच का एसा ही इस्तेमाल होता रहा तो देखना नाटक वाले लोग साले नाटक तो तुम्हारे लिए करेंगे और दिखाएगा मिल मालिको सरकारी अफसरा को जो हाल के बाहर जाते ही भूल जाएंगे कि कौन-कौन-सा दद दिखाया था नाटक वालों

ने। मैं यदि इस कुर्सी पर एक बार भी बैठ गया ना तो हाल म केवल उन्ही लोगो को लाऊगा जिनके लिए तुम लोग नाटक करते हो। (दर्शकों से) आप ही बताइए भाई लोगो कि देश म जब आग लगी हो तो स्त्री-पुरुष के सम्बन्धो पर नाटक दिखाने का क्या तुक है? मैं वोट मागने नही आया आप लोगो को आगाह करने आया हू कि जब भी आपके पास कोई वोट मागने आये तो उसका स्वागत आप तालियो से नही गालियो म कीजिए। उसका स्वागत फूल मालाओ म नही अदन के चीथडो से कीजिए (प्रस्थान)

[प्रेरणा अपने समर्थकों, कवि और पत्रकार के साथ प्रवेश करती है। तालियों की गडगडाहट।]

प्रेरणा आप लोगों ने इतना खर्च किया फिर भी जहा जाओ मुट्ठी भर श्रोता।

कवि मैडम, दरअसल लोगो का विश्वास उठ गया है नेताओ पर से।

पत्रकार हा मैडम वे सोचते हैं कि ये लोग जो कहते हैं वो करते नही और जो करते हैं

कवि वो कहते नही।

प्रेरणा लेकिन हम जो करेंगे वही कहेंगे और वही कहेंगे जो करेंगे।

पत्रकार लेकिन फिर भी कुछ नहा करेंगे।

प्रेरणा क्योकि हम कुछ खास कहेगे ही नही। (भाषण के लहजे मे) मैं कुछ नही कहूगी ना ही आपसे अपने लिए वोट मागूगी मैं तो केवल यही चाहूगी कि आपने यदि उन दोनो नेताओ की बातें ध्यान से सुनी हो तो आप पाएगे कि उन्होने हमारे देश की परम्परा से कितनी हटकर बात की है। रगकर्मी महोदय ने अब तक किया क्या है? चार छ नाटको म काम कर लेने से ही कोई अनुभवी नही हो जाता। फिर यह तो आप भी जानते ही होगे कि अनुभव की मुझम कोई कमी नही। कुछ लोगो का कहना है कि मैंने छप्पन घाट का पानी पिया है हो सकता है उनका कहना सच भी हो लेकिन अनुभव की जरूरत भी क्या है? हम गर्व है कि हम एक ऐसे देश के नागरिक हैं जहा योग्यता कुछ भी मायना नही रखता। (किसी एक से) या रखता है?

आदमी (उठकर) अजी नही रखता।

कवि अजी बिलकुल नही रखता।

प्रेरणा शाबाश! तो मैं कह रही थी कि अनुभव या योग्यता की कोई

जरूरत नही है। एक छोटा-सा सवाल पूछती हू आप सबा से। एक मास्टर को कितना पढा लिखा होना जरूरी है ?

कई आदमी बी० ए०, बी० एड०।

प्रेरणा और एक मिनिस्टर का ?

न० 1 जी अगूठा लगाना आना चाहिए।

कवि और भारत का नागरिक हो।

पत्रकार पागल, दिवालिया ना हो।

कवि और पच्चीस बरस क ऊपर का हो।

प्रेरणा ता धय धय है यह भारत की भूमि जहा हम पल-बढ रह हैं। प्रजातत्र की अदभुत मिसाल दखिए जा शिक्षक नही बन पाता वह शिक्षामत्री बन सकता है। हमारे जिन बेराजगार भाइयो ने सब ओर से निराश होकर राजनीति का दामन पकडा आज अपने भाई भतीजा को धडल्ल से रोजगार दे रहे है। यह हमार सिद्धात की महानता है जिसम अमीर गरीब, शिक्षित-अशिक्षित सबा को अपने-अपने भाग्य के आजमाइश की खुली छूट है। (भीड ताली बजाती है।)

कवि अजी राजनीति तो ऐसी लाटरी का टिकट है जो आपका कभी भी मालामाल कर सकती है।

प्रेरणा मुझसे अक्सर सभाआ म कहा जाता है कि क्या मैं अपने परिवार पर ध्यान नही देती ता मैं हमेशा जवाब देती हू कि सारा देश मेरा परिवार है किस पर ध्यान दू और किसे छोड दू। अब मेरे सामने यह भी समस्या है कि इतने कम समय म कहा-कहा भाषण दू और कहा छोड दू ?

कवि (अत्यत नम्र निवेदन) मडम अतिम परा ता बोल ही दीजिए।

पत्रकार और मडम वो वाली बात।

प्रेरणा आप लोगा स बातें करते हुए लगता है कि मैं चद्रगुप्त और चाणक्य बुद्ध और महावीर नानक और गुरु गाविन्दसिंह अक्बर राणा प्रताप औरगजेब शिवाजी, विवेकानन्द, दयानन्द गाधी और नेहरू की सताना स बातें कर रही हू जिन्होने दश के लिए क्या नही किया। उन सबा ने देश के लिए बहुत कुछ किया और मैं तो यहा तक कहूगी कि उन्होने देश के लिए सब कुछ किया।

भीड मे म आवाज लेकिन किया क्या य तो बताओ ?

[भीड मे से दो आदमी उसका मुह बद करके बाहर कर देते है।]

मैं आपको आज उन्हा पूर्वजों की कसम देती हूँ कि एक बार मुझे मौका दीजिए। मैं आपको भरोसा दिलाना चाहती हूँ कि मैं और मेरा परिवार हमेशा आपको एक स्थायी सभापति बना रहेगा। मैं तीन बार परम्परा है जो कायम रहेगी कहूँगी और आप सब मेरे साथ कायम रहेगी-कायम रहेगी कहेंगे।

प्रेरणा परम्परा है जो कायम रहेगा।

भीड़ कायम रहेगी-कायम रहेगी ! (प्रकाश बुझ जाता है।)

दृश्य 4

[17 18 वर्ष के उम्र की कोई लड़की एक तिपाई पर बैठी हुई सिसक रही है। उसकी दशा देखकर लगता है कि थोड़ी देर पहले उसकी पिटाई हो चुकी है। न० 5 उसका पिता और न० 2 उसका भाई है।]

न० 2 ये सब आपकी दी हुई छूट का नतीजा है।

न० 5 मुझे पता होता कि बड़ी होकर हरामजादी ये दिन दिखायगी तो इसकी मां की चिता पर इसको भी रख देता।

न० 2 नहीं-नहीं और प्यार कीजिए। बेटी को इण्टेलेक्चुअल बनाइये। नाटक करने वाले तो इण्टलेक्चुअल्स होते हैं ना आपकी नजर में।

न० 5 आज के जमाने में सब चोर हैं साले और इण्टेलक्चुअल्स और बास्टर्ड्स।

न० 2 सारे मुहल्ले में थू-थू हो रही है। कौन नहीं जानता कि वह दढ़ियल दिन में भी यहां क्या आता था ?

लड़की मैंने कितनी बार तो कह दिया रिहर्सल के लिए आते थे।

न० 5 रिहर्सल के लिए आते थे तो अकेले क्या आते थे ?

लड़की पापा, उस नाटक में दो ही करेक्टर हैं।

न० 2 चुप करेक्टर की बच्ची। पहले अपना करेक्टर देख। नाटक करने आता था या तुम्हें प्रेम-पत्र लिखने, वाले !

न० 5 क्या लिखा उस भिखमंगे ने तुम्हें यह चिट्ठी ? क्यों लिखा ?

लड़की पहले मैंने लिखा था।

न० 5 देखा मुहल्लेवाले झूठ थोड़े ही बोलेंगे।

लड़की मोहल्लेवाले किस लड़की के लिए अच्छा बोलते हैं भैया ? पड़ोसी

की लडकी सबा को चरित्रहीन ही नजर आती है। लडकी हम तो बावली हो गई राय तो प्रेम रोगी। अरशद स प्रेम करके मैंने ऐसा कौन-सा गुनाह कर दिया कि मैं ना तो हस सकती हू और ना ही रो सकती हू ? बोलो ना, मैंने कौन-सा गुनाह कर दिया ?

न० 5 तूने खानदान का नाम रोशन कर दिया।

न० 2 और वो भडवा, वडा शरीफ बना फिरता है। नाटक करता है या लडकिया टापता है ? गोष्ठी मे जाता है हरामी, लेखक बनता है लुच्चा, कवि है कुत्ता।

लडकी तुमम ना तो सीधी बात समझने की तमीज है और ना ही अच्छी भाषा बोलने की।

न० 2 मुझे घर और कोठे म फर्क समझने की तमीज है।

लडकी तो मैं भी घर बसाने जा रही हू उसके साथ। शादी करूगी तो उसी से करूगी।

न० 2 शादी ? और उस मुसलमान से ? बाबर की सतान स ? इससे पहले गला घोटकर मार नही डालूगा तुझे ! (लडकी की तरफ लपकता है। दरवाजे पर दस्तक की आवाज।)

न० 5 (सहमे ढग से) कौन ?

[बाहर से भी एक सहमी हुई आवाज—जी मैं !]

न० 2 (तेज आवाज मे) मैं ? मैं कौन ?

नेपथ्य जी, मैं ! मैं राही मतवाला।

[न० 2 लडकी को इशारे से दरवाजा खोलने का आदेश देता है, न० 5 उसे इशारे से रोक देता है।]

न० 5 क्या काम है ?

नेपथ्य जी काम अपराजिता जी स है, उन्ह रिहर्सल पर ल जाना है।

न० 2 वह नही आयेगी आज।

नेपथ्य (ओर से) जी यह कम हो सकता है ?

न० 5 कह देना उसकी तबीयत खराब है।

नेपथ्य एक बार दरवाजा खोलिए ना प्लीज, मुझे उनसे कोई और बात भी करनी है।

[न० 5 लडकी को दरवाजा खोलने का निर्देश देता है। लडकी उठती है। अपनी आखों के किनारों को पोंछती है और दरवाजा खोलने का मूकाभिनय करती है। जोकर नुमा रगकर्मी न० 4 का प्रवेश। पहले लडकी को नमस्कार

€

करता है फिर न० 5 फिर न०2 को उसे कहीं से जवाब नहीं मिलता है।]

न० 4 क्या हुआ अपराजिता जी को ?

[न० 2 लड़की की बांह पकड़कर अन्दर की ओर ले जाता है और विंग्स में धक्का देकर वापस मंच पर आ जाता है।]

न० 5 कुछ नहीं मैंने मना किया है।

न० 4 य आपने क्या किया ? आपको पता भी है कि परसों शो है ?

न० 5 मुझे सब पता है। आप यहां से जाइए और आपने उस दाढ़ीवाले डायरेक्टर साहब को जरा कह दीजिएगा कि मैंने याद किया है।

न० 4 जी आह अच्छा कह दूंगा क्या कह दूंगा ?

न० 5 आपको पता है !

न० 4 जी क्या ?

न० 5 हां-हां वही अरशद साहब का मामला।

न० 4 जी मुझे नहीं पता।

न० 5 आपको सचमुच नहीं पता ?

न० 4 जी थोड़ा थोड़ा पता है।

न० 5 क्या आप लोग इसीलिए नाटक करते हैं ?

न० 4 (सिर झुका देता है।)

न० 5 जवाब दीजिए !

न० 4 जी मैं तो कुछ नहीं किया।

न० 5 नहीं नहीं मैं आप सभी लोगों की बातें कर रहा हूं।

न० 4 जी आप अरशद की बातें कर रहे हैं तो केवल उसी की बातें करिए (पसीना पोंछकर) मैं तो अक्ल में भी लड़कियों के बारे में कभी कोई गन्दी बात नहीं करता शर्म शेम होती है ना।

न० 5 आप अपनी नहीं अरशद के बारे में ही बताइए।

न० 4 तो सुनिए संस्था ने उसे बाहर निकाल देने का फैसला कर लिया है वास्तव में यह बहुत बुरी बात थी संस्था की भी बदनामी होती है। दो बालिग प्रेमी प्रेमिका बिना बाप भाई से पूछे आपस में शादी तक का फैसला कर लें, वह भी दूसरे धर्म और जाति में यह तो भयंकर अपराध है। वैसे भी अभी तक बाबरी मस्जिद और राम मंदिर का लफड़ा सुलझा नहीं है। अब तो हमारी संस्था भी यहां से अयोध्या तक की रथयात्रा निकालने का फैसला ले चुकी है।

न० 2 ठीक है, ठीक है। इस नाटक में यह तभी काम करेगी जब आप उसे निकाल दें।

न० 4 यह काम आज ही हो जायगा, भाई साहब!

[लड़की का प्रवेश। आलेख की प्रति गुस्से से न० 4 के मुंह पर फेंकती है।]

कन्या क्या कहा? अरशद को तुम लोग संस्था से निकलवा दोगे केवल इसलिए कि उसने मेरे साथ शादी का फैसला किया है। तुम थियेटर करते हो या वोटों की गन्दी राजनीति जो कि एक इन्सान को हिन्दू और मुसलमान में बांटकर देखते हो। जाओ कह देना कि अपराजिता भी काम नहीं करेगी तुम लोगों के साथ। मैं तुम लोगों के साथ इसलिए थियेटर करती रही मैं सोचती थी कि तुम्हारे विचार वास्तव में ऊंचे हैं। लेकिन अब लग रहा है कि तुममें भी कथनी करनी का वही फर्क है जो औरों में है। धर्म जाति और सम्प्रदाय के बीच की खाई पाटने के डायलाग तुम महीनों तोते की तरह रटते रहते हो कुत्तों की तरह भौंकते रहते हो। दहेज के लेन-देन का विरोध रंगमंच पर ही कर सकते हो आम जीवन में तुम सब के सब दब्बू हो। समझौतावादी हो। क्रांति मंच पर हो, अखबारों में हो कलम से हो तो तुम्हें अच्छा लगता है लेकिन जीवन में हो यह तुम्हें मंजूर नहीं।

न० 2 अब मेरी समझ में आ गया कि दूसरों की बहनों के साथ थियेटर करना तुम्हें अच्छा लगता है। अपनी बहनों को थियेटर में लाने के लिए तुम कितने रंगकर्मी तैयार हो? अरे अक्ल के अंधो, थियेटर करते हो तो कुछ अच्छी चीजों को केवल मंच पर ही नहीं अपनी जिन्दगी में भी उतारो।

न० 4 आप मुझ पर क्या इतना बिगड़ रहे हैं? आपकी बहन है आप जानें मैं तो चला।

न० 2 (न० 5 से) पापा अपराजिता को थियेटर करना चाहिए ना।

न० 5 लोगों से पूछो बेटे। (प्रकाश बुझ जाता है।)

दृश्य 5

[कवि और पत्रकार प्रेरणा का इन्तजार कर रहे हैं।]

पत्रकार भैया कवि।

कवि (हड़बड़ाकर) जी सरकार।

पत्रकार सरकार नहीं, पत्रकार तेरा लगाटिया यार।

कवि अच्छा तो तुम थे मैं समझा मैडम आ गई।

पत्रकार सपने में जी रहे हैं बरखुरदार। अब इलेक्शन के पहले जैसी बात नहीं है कि मैडम पानके पापड़े बिछाए मिलती थीं।

कवि ठीक कहते हो भैया। जीत जाने के बाद तो मैडम हमें पहचान भी लें तो समझें कि मानुष जनम सुफल हुआ।

पत्रकार मानुष नहीं चमचा जनम।

कवि शम करे। शम करे। इतने सारे लोग बैठे हैं यहां और करीब करीब हर आदमी अपने मतलब के लिए अपने से बड़े को खुश करने में लगा हुआ है। ऐसा करते हैं दो चार घंटे और रह लेते हैं।

पत्रकार मुझे तो आज मैडम का इण्टरव्यू हर हाल में छापना है। मेरी प्रेस्टिज' का सवाल है।

[दूर से आती हुई प्रेरणा को देखकर कवि दण्डवत् हो जाता है। फूल मालाओं से लदी विजयी प्रेरणा एक सिंहासन नुमा कुर्सी पर बैठी है। कई पात्र कमरे का लगातार इस्तेमाल करते हुए प्रेरणा के इर्द गिर्द जमघट का माहौल पैदा कर रहे हैं। प्रेरणा इशारे से पत्रकार को अपने पास बुलाती है।]

पत्रकार हां-तो मैडम जब आप नाट्य सभा की सभापति चुन ली गई हैं तो रंगमंच के भविष्य के बारे में आपके विचार ।

प्रेरणा सबसे बड़ी समस्या तो इस समय विरोधियों की है। हम यदि कुछ करना भी चाहेंगे तो वे कबाब में हड्डी की तरह सामने आयेंगे।

पत्रकार खुशी के इस मौके पर देश के रंगकर्मियों के नाम कोई संदेश?

प्रेरणा (नकारात्मक संकेत।)

पत्रकार क्या मैडम?

प्रेरणा इसलिए कि हमारी नजर में रंगकर्मी हो या कुकर्मी—सब बराबरी के हकदार हैं।

कवि वाह क्या बात है! क्या बात है!

[कवि और पत्रकार के अतिरिक्त शेष पात्र प्रेरणा की बात से नाराज होकर विंग्स में चले जाते हैं।]

पत्रकार आप अपने काल में रंगमंच के क्षेत्र में कोई क्रांतिकारी कदम उठाना चाहेंगी?

प्रेरणा ऊहूं ! फिलहाल तो कोई क्रांति-भ्रांति का इरादा मिरादा नहीं है। फिर भी ऐसी घोषणा कर गई कि रंगमंच की मुझसे जो भी आशाएं हैं उन्हें पूरी करके ही कुर्सी से हटूंगी मैं। चाहे इसके लिए मुझे अपनी जान ही क्या न देनी पड़े। जरूरत हुई तो दुबारा जन्म लूंगी मैं।

कवि वाह ! इसे कहते हैं देश-सेवा का जुनून।

प्रेरणा लेकिन तुम वैसा का वैसा मत छाप देना अपने अखबार में।

पत्रकार नहीं नहीं, मैडम, हिसाब से छापूंगा।

प्रेरणा वादा रहा कैसा भी प्रेस विधेयक पारित हो तुम्हारे अखबार का बाल बांका भी नहीं होगा।

पत्रकार फिर तो चाहे पूरे हिन्दुस्तान के अखबारों में हड़ताल हो, सेवक का अखबार हमेशा आपकी खिदमत में हाजिर रहेगा।

प्रेरणा फिर तुम भी क्या याद रखोगे कि मैंने तुम्हें एक फटीचर पत्रकार से कितना बड़ा उद्योगपति बना दिया।

कवि (डरते डरते) मैडम ! (गला खखारकर) मैडम, आपने तो पत्रकार पर बड़ी दरियादिली दिखाई। आखिर हमारी भी तो कुछ योजना थी, भविष्य को लेकर।

प्रेरणा हां भई अब तुम बोलो क्या चाहते हो ? इस साल रंगमंच का कोई एवार्ड वगैरह चाहिए क्या ? तुम कहो तो तुम्हारे मरने के बाद भारतीय मंच रत्न पक्का कर दूं ? क्या कवि छोटे मोटे कामों के लिए गिड़गिड़ाया मत करो।

कवि तो एक बड़ी तमन्ना अर्ज करूं मैडम !

प्रेरणा हां-हां, बोलो।

कवि रहने दीजिए।

प्रेरणा भई जल्दी बोलो। देखो हमने काफी समय से जनता के लिए कुछ भी नहीं किया। तुम लोगों से कभी फुर्सत ही नहीं मिलती। फिर चुनाव जीतने के लिए उल्टे-सीधे हथकंडे अपनाने पड़ते हैं। पिछली बार कोर्ट में उस ईमानदार जज के कारण कितनी बेइज्जती हुई थी मेरी।

कवि मैडम बोल दूं एक बार मैं इस मौके का फायदा उठाना चाहता हूं और आपके शासनकाल में पहली बार इतने श्रोताओं को अपनी ताजी कविता सुनाने की मुराद पूरी करना चाहता हूं।

पत्रकार (गिड़गिड़ाकर) नहीं मैडम, कदापि नहीं। हम अपने दर्शकों से कोई दुश्मनी नहीं उतारनी।

कवि मुझे इनके कथन पर घोर आपत्ति है।

पत्रकार आपकी कविताएं दशरा पर विपत्ति हैं।

कवि विपत्ति ही कविता की उत्पत्ति है।

प्रेरणा खामोश ! कविताएं राष्ट्र की सम्पत्ति हैं। पत्रकार बन्धु की यह दलील गलत है कि इनकी कविताएं विपत्ति हैं। मेरी बेटी-बहू को भी यदि मेरी राजनीति पसंद नहीं तो वह अपनी दूकान अलग खोल सकती हैं। (कवि से) अच्छा पहले यह बताओ कि तुम क्या सुनाओगे ?

कवि जो आप सुनना पसंद करेंगी। ब्रह्म पर, परब्रह्म पर, द्वैत पर, अद्वैत पर उपासना पर वासना पर

प्रेरणा तुम तो क्या कहते हैं उसको अध्यात्म की ओर बढ़ रहे हो ।

कवि कहिए तो कनियुगी कविताएं सुना दूं। प्रेम पर घृणा पर लैला पर मजनू पर नाले पर पहाड़ पर महंगाई पर सस्ताई पर अमीर पर गरीब पर बुराई पर अच्छाई पर दूध पर मलाई पर

पत्रकार साफ-साफ कहिए ना फैक्टरी में हर तरह का माल है।

कवि (पत्रकार को नीचे से ऊपर तक निहारकर) क्या आप क्या मेरी फैक्टरी के स्टोरकीपर लगे हुए हैं ?

प्रेरणा बातें कम, काम ज्यादा।

पत्रकार दूरदृष्टि पक्का इरादा।

प्रेरणा तुम शुरू करो अपनी कविता। किसी तरह खुश कर दो मुझे आज। जो अरकर आज मेरे रूप की प्रशंसा करेगे। जब तुम एक नारी के रूप की प्रशंसा ठीक ढंग से कर लोगे तभी तुम एक सच्चे दरबारी कवि कहलाने के अधिकारी होगे।

कवि आपके रूप की क्या प्रशंसा करूं ? सूरज के सामने मोमबत्ती कैसे जलाऊं ? जितना सुन्दर आपका रूप है उतनी सुंदर प्रशंसा कैसे हो सकती है ?

प्रेरणा ठीक है ठीक है। थोड़ी और कोशिश करो। धीरे धीरे लाइन पर आते जा रहे हो।

कवि मुझे आपके सामने शर्म महसूस हो रही है ?

प्रेरणा मेरे सामने शर्म कैसी ?

कवि नहीं नहीं मैडम मुझे आपके सामने नहीं मुझे आपके सामने शर्म महसूस हो रही है ।

प्रेरणा अच्छा अच्छा ! (पत्रकार से) सुनो तुम जरा (बाहर जाने का इशारा करती है। पत्रकार अनमने ढंग से बाहर चला जाता है।)

कवि पूनम, ओ पूनम !

प्रेरणा पूनम मीन्स पूरनमासी।

कवि यस ! पूनम मीन्स पूरनमासी ?

पूरनमासी हुआ नहीं चंदा, कभ पूरा उग आया
टटोलकर देखना चाहता हूं, कहीं हो न यह छाया
कटि तक केश लहरान नागिन जैस बल खान
गालों के गड्ढे, ये तीर छोड़ने नैन
इस बेपनाह हुस्न ने छीन लिये हैं दिल के चैन
अल्हड़ है जवानी तेरी ये चाल जो तेरी मतवाली
सोने में सुहागा बन बैठी है तेरे कानों की बाली
इस लाल दुपट्टे से भी ज्यादा तेरे होठों की लाली
कवि की कविता को मत कह देना तुम उसकी गाली।
कुछ हासिल भी हो सकेगा मुझे
या लौट जाऊं तेरे दर से मैं खाली
मेरे सामने कभी तुम यों मत आया करो
नजर मेरी लग जायगी तुम्हें
कजरे की बिंदिया लगाया करो
डरो मत कजरे से, नहीं हो जाओगी तुम काली
नाली को खुद में भी मिलाकर
गंगा नहीं हुई है नाली।

प्रेरणा (अपनी लंबी हंसी रोकने का प्रयत्न करते हुए) बस बस करो अब। समझ गई मैं आज के बाद में तुम्हारी बोर से बोर कविता भी रेडियो पर प्रातःकालीन वंदना में रखी जाएगी। लेकिन एक बात बताओ तुम्हारी कविता रूमानी तो थी लेकिन उसमें भाव क्या था ?

कवि मैं कविताएं 'होलसेल' में करता हूं इसलिए एकाध कविता का मोल भाव नहीं करता। (शर्माते हुए) अभी वाली कविता फ्री गिफ्ट था मेरी तरफ से।

प्रेरणा थैंक्यू।

[घबराए हुए पत्रकार का प्रवेश]

पत्रकार मैडम ! मैडम वे लोग आ गए।

प्रेरणा कौन लोग ?

पत्रकार अपाहिजन बार।

प्रेरणा मैंने तो कोई मीटिंग नहीं बुलाई। मंच अधिवेशन शुरू होने में तो हफ्ता पड़ा है।

पत्रकार नहीं मैडम, मैंने उन्हें एक जुलूस के साथ आते देखा है। उनके हाथ में इतने बड़े बड़े डंडे थे।

कवि (कुर्सी के नीचे छिपने की कोशिश करता हुआ) भला बुद्धिजीवियों के हाथों में डण्डा की क्या जरूरत पड़ गई? हे बापू देख लो अपनी आखों से तुम्हारे देश में घोर अन्याय हो रहा है। अहिंसा के सीने पर हिंसा सवार हो रही है।

[पार्श्व में जुलूस का शोर]

कवि पत्रकार (मिलकर गाते हैं।)

मैडम थामे हैं दामन तुम्हारा
अब कोई सहारा नहीं है।
जहां जूती होगी तुम्हारी
हम वहीं पर सिर को रखेंगे
मैडम थामे हैं दामन तुम्हारा
अब कोई सहारा नहीं है।
जहां नालों में पड़ी जो मिलोगी
मच्छर बनकर वहां हम मिलेंगे
मैडम थामे हैं दामन तुम्हारा
अब कोई सहारा नहीं है।

[जुलूस का शोर निकट आता जा रहा है। पार्श्व से नारों की आवाजें।]

पहली आवाज गली गली में शोर है।
प्रेरणा बाई चोर है।

[प्रेरणा ठहाके लगाकर हंसती है।]

दूसरी आवाज प्रेरणा बाई रंगमंच छोड़ो
हाल के बाहर पटाखे छोड़ो

[कवि और पत्रकार दोनों सहमकर एक दूसरे के गले लग जाते हैं।]

तीसरी आवाज प्रेरणा तेरे राज में
लोग टिकट को रोते हैं।
हमने रोना दूर रहा
हाल में दर्शक सोते हैं।

चौथी आवाज प्ररणा हटाओ-मच बचाओ मच बचाओ प्रेरणा हटाओ।

प्ररणा (लगभग चीखते हुए) तो नौबत यहा तक आ पहुची है। ठीक है तुम एसा करो दशकों के बीच घोषणा करवा दो या फिर आज के 'रगमच समाचार' मे यह खबर भिजवा दो कि फ्ला फला जातिया क लिए मच पर फला फला प्रतिशत सीट आरक्षित किए जाने का सरकारी निणय लिया जा चुका है। सरकार हर कीमत पर अल्पसख्यको के हितो की रक्षा करगी और हर उस आदमी को हाल म मुफ्त प्रवेश देगी जो रगमच के किसी राजपत्रित अधिकारी से इस आशय का पत्र लाकर दे कि वह 'काटा का आदमी है। आज के बाद से रगकर्मियो को फालतू नही समझा जाएगा और उनके लिए कोई भी निणय लेने से पहले उनस भी सलाह ल ली जाएगी। (पत्रकार का तेजी से प्रस्थान) और सुनो 'सिक्योरिटी' वालो स कहना कि गोली बिलकुल नही चलनी चाहिए। केवल धुए और लाठी स काम चलाना होगा।

[प्रेरणा कुछ सोचकर अति प्रस न होती है और बेतहाशा ठहाके लगाना शुरू कर देती है।

पत्रकार परेशानी की हालत म प्रवेश करता है। जुलूस के आदमियों की चीख पुकार की आवाजें आती ह।]

प्रेरणा सुनो मैं ता भूल ही गई थी क्यो ना हम मच पर आपात स्थिति लागू कर दें— इमरजेंसी'? वसे भी हिंदी थियटर का कोई भला तो हो नही रहा—रेडियो और टलीविजन पर कई किस्म के मच्चे झूठे आश्वासन देन स तो बेहतर है एक करारा तमाचा ही मार दिया जाए। सबा की बालती बद कर दो (क्रूर हसी) नारे जुलूस, इस्तीफा—मूख कही के! इसे कहत हैं अधिकारा का सही उपयाग जिस कायर लोग जुल्म और तानाशाही कहत हैं।

[हाल में पूण प्रकाश।]

रगकर्मी (मच के अग्रभाग पर आकर बताता है।) अभी हमारे ऊपर राजनीति क बादल मडराने लगे थे इसलिए हमन अपन मचीय कायक्रम कुछ दर के लिए रोक दिए हैं। जस ही आसमान साफ होगा हम आपको हमारी और आपकी मिली-जुली समस्याओ का मिला-जुला रूप दिखायेंगे। तब तक क लिए मध्यान्तर समझ लीजिए। लेकिन ध्यान रहे, कवल दस मिनटो का। खाने-पीने की चीजें हॉल के अन्दर मत लाइएगा प्लीज!

(मध्यान्तर)

अक दो

दृश्य 1

रगकर्मी मध्यान्तर की अवधि समाप्त हुई। नाटक के प्रथम अक म हमन आपको बताया कि राजनीति हम किस हद तक प्रभावित करती है और इस अक म हम कुछ अन्य समस्याओ से भी आपका साक्षात्कार करवायेंगे। यह तय है कि हम जिस व्यवस्था म जीते हैं हमारे भीतर वसे ही सस्कार पनपते हैं। नाटय सभा के सभापति सत्ता के मद म चूर हो गए हैं और हमारी स्थिति उन हरामियो की तरह हो गई है जिन्ह अपने पिता अपने सरक्षक की तलाश है। हम इमरजेन्सी मे यह 'शो' करना तो नही चाहिए था क्योंकि मच के ठकेदारो को यदि यह पता चल गया कि हमने उनका विरोध उनके ही 'प्लेटफार्म' पर किया है तो हम मच मीसा म सडना भी पड सकता है। तो लीजिए नाटय सभा के विपक्षी सदस्य प्रस्तुत करते हैं—

[मच पर प्रकाश। रगकर्मियों का एक दल मच पर नाव चलाने का दृश्य उपस्थित करते है।]

समूहगान हइया ओ हइया हो हइया हो ऽऽऽ
भइया हो, भइया हो ऽऽऽऽ
नाटक म नाटक हइया
सुन लो बापू सुन लो माई
सुन लो भरे भइया
हइया हो, भइया हो हइया हो, भइया हो ऽऽऽऽऽऽ
इक नाव के खेल म
जायेंगे हम जेल म
कश्ती डूबेगी अपनी
सभालो अब तुम नइया
हइया हो, भइया हो ऽ ऽऽऽऽ

[तूफान का माहौल। अभिनेताओं द्वारा किश्ती डुबोने का अभिनय अभिनेताओं के दल का तितर बितर हो जाना।]

न० 1 हमको दो जून रोटी दो!
न० 2 सर पर टीन टप्पड दो।
न० 3 तन पर एक लगोटी दो।
न० 4 आज दो और अभी दो।
न० 5 हमको राजी रोटी दो।
न० 1 बासी दो या ताजी दो।
शेष पात्र रोटी दो रोटी दो!
न० 2 नही चलेंगे-नही चलेंगे!
शेष पात्र झूठे वादे नही चलेंगे।
न० 3 आधी आई-आधी आई।
शेष पात्र (किसी स्थानीय सिनेमा हाल का नाम लेकर)—म गाधी आई।
न० 4 रोजाना चार शो म।
शेष पात्र टक्स फ्री!
न० 5 बुरा मत बोलो (फ्रीज)।
न० 1 बुरा मत सुनो (फ्रीज)।
न० 2 बुरा मत देखो (फ्रीज)।
न० 4 मुह म राम छुरी अन्दर।
न० 3 गाधी के हैं तीनो अन्दर।
न० 4 पैसा की जरूरत हो जग सस्था के लिए।
शेष पात्र बस एक लडकी चाहिए नाटक के लिए।

[अभिनेत्री का 'मैं आई-आई-आई' गाते हुए प्रवेश]

न० 1 आऽऽऽऽ जाऽऽऽऽ
न० 3 (आगे बढ़कर) आओ प्यार करें।
अभिनेत्री जमाने को दिखाना है।
न० 3 आज बहुत गर्मी है दोस्त।
अभिनेत्री (जाते हुए) आज मुझे नहाना है।
न० 3 तो तुमको मुझसे प्यार है। (गाते हुए) तो तुमको मुझसे प्यार है।
लड़की नमस्कार! आज गुरुवार है।
न० 1 (न० 2 से) क्या, कमी रही कल की प्रशंसा?
न० 2 (आँख मारते हुए) आज फिर जाना है यार।
न० 1 क्या माहुर है या दलाल?

न० 2 साले आस्तीन के साप ।

[अभिनेत्री 'तन डोले मेरा मन डोले' की धुन पर नत्य करती है। पीछे-पीछे अभिनेताओं की पूरी टोली सांप की तरह फुफ्कारती हुई चली आ रही है।]

न० 5 एक सौ इक्यावन जहरीले साप्पो क विच्च कुम्मारी अशा। जिन्दगी और मौत के विच्च कुम्मारी अशा। (गला साफ कर माइक टेस्टिंग का अभिनय) एलो एलो एना माइक टेस्टिंग माइक टेस्टिंग हा तो जनाब कुमारी अशा। आपके पास-पडोस म कोई साप निकल आता है—सारा मोहल्ला दौडा चला जाता है अकेले कही दिख जाता है—टट्टी-पेशाब बन्द हो जाता है। य साप साब सोती औरत का छाती पी जाता है और य देखिये साब ये साप है कोब्रा। पहाडी कोब्रा है। साब अगर झूठ बालू तो लास मारकर बाअर कर देना साब कि यागाली का बोच्चा झूठ बोला। लेकिन नही साब सूरज डूबने के पहले अपन झठ नहा बालेगा हम्मारे मथुरावासी सुरगवासी गुरु की कसम साब कि इसक का काट्टा पानी नही मागता।

[नतकी का नत्य थम जाता है। अभिनताओं का दल रोने लगता है।]

समूह पानी पानी पानी ।

न० 5 मारूगा साला को एक-एक थप्पड तो नानी याद आ जाएगी।

शेष पात्र नानी नानी नानी ।

न० 5 चुप वे हरामी।

1, 2 3 4 अरे हा हरामी—पाच हरामी। (नाचने लगते ह।)

न० 5 जश्न मत मनाओ जल्दी करो। (न० 1 से) तुम उधर से दारु पीते हुए आओगे, (न० 2 से) तुम उधर लेटोगे, (न० 3 से) तू मेरे साथ सोयेगा (न० 4 से) और तू साला अभी तक खडा-खडा मेरा मुह क्या देख रहा है ! उधर जाकर मर ! (अभिनेत्री से) और आप अगले सीन के लिए कपडे बदल लीजिए इस बीच म। अगले सीन म आपको 65 साल की बुढिया का रोल करना है। (अभिनेत्री का पर पटकते हुए प्रस्थान।)

[सभी पात्र खर्राटे भरने लगते ह। थोडी देर बाद न० 2 उठता है। अपनी कमर के पास से कागज का एक पुलिंदा निकालता है।]

(नं० 2 कागज को टुकडों मे फाड रहा है।)

नं० 1 अरे काहे को गुस्सा उतारता है इन बेचारा पर, सभालकर रख। प्रेम-पत्र हैं ये—तुम्हारी जवानी की कमाई।

नं० 2 आप समझते नही है भैया जानते भी हैं उन्होंने क्या कहा ?

नं० 1 गलत। बकवास। कहा नही होगा, पूछा होगा तेरे से। तेरे काम धंधे के बारे में कुल-खानदान के बारे मे। तेरा ससुरा मोटा तगडा तो नही था ना, मार-वार बठा क्या ? अपने को बताना सिपाही हवलदार से लेकर थानेदार तक दुआ-सलाम है अपनी।

नं० 2 तुम तो हर बात को दारू की बोतल पर लाकर खत्म कर देते हो भैया, मैं कैसे समझाऊ सारी दुनिया को। कल्पना मेरे जीने की शक्ति है।

नं० 1 तो किसने मना किया है खूब कल्पनायें किया करो। अरे बोल किस भडवे का ज्यादा चढ गई है ?

नं० 2 आपसे फिर कभी बात करूगा। मैं कल्पना के बगैर नही रह सकता, मैं प्यार करता हू उससे।

नं० 1 छोड दे फिर।

नं० 2 क्या ?

नं० 1 यही प्यार करना। मर जायगा बेटा, खतम हो जायेगा। कोई काम नही देगा।

नं० 2 आप लोग समझते ही तो नहीं हैं ना मेरे सीरियस लव' को। आई कान्ट लिव विदाउट हर भैया 'आई कान्ट'।

नं० 1 अरे वाह, तू तो अच्छी अंग्रेजी बोलता है। अपने को अंग्रेजी पिये एक जमाना गुजर गया और तू अंग्रेजी बोलता है ? हम भी बोलेगा आई स्पीकिंग इगलिश—पब्लिक इज मीइग अस वी आर मीइग पब्लिक, वी आर एक्टिंग—दे आर रिएक्टिंग—आहो ना मिस्टेक—नो प्राब्लम।

नं० 2 आपको दारू मे फुरसत मिले तब ना। आप कल्पना के पिताजी से मिलकर ।

नं० 1 क्या बोला ऐं दारू ? तू गन्दा मर्द—यू अंग्रेजी—अंग्रेज का बच्चा अंग्रेजी बोलेगा—हिन्दी बोल पहले—हिन्दुस्तान में रहना है तो हिन्दी बोलना सीखो पहले—मेरा भाई बनकर जीना है तो पहले हिन्दी में बात करो।

नं० 2 ये आप नही आपकी दारू बोल रही है।

नं० 1 दारू कोई मरदी है जो बोलगी ? अरे,

—क्या समझा ? यह बोलेगा यह बानगी नही—यह छाती ठोककर बोलेगा—दारू पीता हू मैं—अपने बाप के भी नही अपने पैसा का दारू पीता हू मैं, किसी के घर की दीवार नही, फादता, किसी गरीब का खून नही चूसता—दारूबाजी करता हू रडीबाजी नही करता।

न० 2 (जाते जाते रुआसे स्वर मे) अब अगर कल्पना ने भी साथ नही दिया तो देखना सचमुच नही जीऊगा मैं। दिल्ली मेल के नीचे (रोने लगता है।)

न० 1 साला कितनी बार कहा है ये प्यार-व्यार छोकरा छोकरियो की बातें मेरे सामने नही किया कर। साला सारा नशा खराब हो जाता है। पानी हो जाता है दारू। तू तो आज सीख रहा है ना प्यार करना और मैंने तो कब का दारू का सहारा ले लिया। मैं तुम्हे एक सच्ची और कडवी बात सुनाऊ—प्रेमी गधे की औलाद और प्रेमिका गिरगिट की नस्ल की होती है। राणा प्रताप की तरह मूछें रखने वाले और गाधी टोपी पहन समाज सुधारने के ठेकेदार ये मर्द जात दलालो और हिजडो की जात होती है और कीडे मकोडे खाने वाली और हर पल अपना रग बदलने वाली जात—औरत जात!

साली कुत्ता-सी होकर रह गई है हमारी इसानी जिन्दगी।

अरे हरामी महीना एडी चोटी का पसीना एक करके पाक मे सुखाया होगा ना तब कही जाकर एक सडी सी लडकी मुस्कराई होगी और तू मन-ही मन मिया मिट्ठू हो रहा होगा कि आई है काई लेना अबके तो चक्कर मे।(अपने दिल की ओर इशारा करते हुए) इधर देख इधर यहा सात जवानी के तीन साल मे तेतीस यू आई-यू गई। लेकिन साफ कहना सुखी रहना। जिस दिन जिसको यह पता लगा कि यहा तो लडके का ही कुछ अता-पता नही तो बाप-खानदान कहा से मिलने वाला तो जिस रास्ते से आई थी उसी रास्ते से फूट चली।

अबे चिरंजीचार साल मेरी बात पर कर यकीन और ऊपर वाले पर रख भरोसा, जिस दिन मेरा मणिपुर स्टेट वाली लाटरी पर पचपन लाख का इनाम निकला ना, तेरे लिए एक से बढकर एक पचपन मा-बाप ला दूगा। जिस पर वह छोकरी तो छोकरी उसका मूगफली बेचने वाला बाप और म्यूनिसपल्टी की झाड़

लगाने वाली अम्मा भी लटटू हो जायेगी समझा।

[सोए हुए पात्र करवट बदलते ह।]

करवट मत बदलो साला सो जाओ। (किसी औरत की तस्वीर की कल्पना) वोतल तो खैर तर पुरान साथियो स लड झगड कर ल ही लता ह खाने लायक छाट भाई लाग कमा ही लत है और एकाध दिन खाना न भी मिल ता चलता है। कुछ लोग खाने क लिए जीत हैं—हम जीन के निए खात ह। इम कहत ह आदश ! आदश ! (विराम) साला वो तुम्हारा आदश नगर वाला सठ हा वही जिसके पास तुम शुरू क पाच साल रही थी आज कह रहा था कि तू तो पोल खोलकर ही दम लगा मरी इज्जत मिट्टी म मिला दगा तू।

हुह इज्जत इज्जत !(थूकता है) आक थू तरी इज्जत मर थूक के बराबर है। माल हम पाचा को हरामी बनाकर हमारी जिन्गी भर की इज्जत धूल म मिला दी तुम रईसजादा ने और मैं यदि कह दू कि तुमम स ही कोई मरा बाप है ता बडा अनथ हा जायेगा।

[काल्पनिक चित्र से बात चीत। नजरें ऊपर की ओर।]

कहत है दोष सरासर तुम्हारा था। तुमन जवानी लुटाया बुढापे के निए क्या बचाया ? मैं भी पूछता हू तुमम क्या बचाया तुमन ? क्या तुम्हारा दोष नही था ? गलती किन लागा न की और जम क पहले तुम्हार गभ स ही सजा भागत हम पाच एक मा के पट स पैदा निर्दोष बच्च।

(रुदन) हर बार तुम केवल इसी उम्मीद पर ही ता धोखा खाती रही ना कि कोई न कोई बलि का बकरा मिल ही जायगा तुम्हें जिस हम बाप कह सकेंगे, लकिन तुम्ह क्या मिला ? हम क्या मिला—समाज की गदी गालिया और दर दर की ठोकरें। (चीखता है) क्या मिला तुम्हें ? क्या मिला हम ? बालो आज मैं तुमसे जानकर ही रहूगा नही तो गला दबा दूगा इन चारा हरामिया का और खुद भी गले म फदा डालकर।

[न० 3 न० 4, न० 5 सभी न० 1 पर काबू पाते ह।]

न० 3 कितनी बार कहा है कि नशी हजम कर पात हो ता पीत ही क्यो हो ?

न० 4 रोज यही न यही से अच्छा पव्वा ल आता है और रात का हमारी नीन्द खराब करता है।

न० 5 कमाता धमाता है नहीं और छोटे भाइयों की कमाई का दारू और जुए म लुटाता है।

न० 1 सालो ! लाटरी को, सरकारी लाटरी का राजस्थान स्टट मणिपुर स्टट की लाटरी को तुम जुआ कहत हो! जिस दिन निकल जायगी आग पीछे घूमा करोग। एक पसा नहीं दूगा किसी का किसी को फूटी कौडी नहीं दूगा।

न० 2 (प्रवश करता हुआ) अब बस भी करो भइया।

न० 1 साल चुल्लू भर पानी म डूब जा प्रेम करन स पहल औकात देख हरामी। य जिन्दगी है जिन्दगी कोई ढाई घण्ट की पिक्चर नहीं महेश भट्ट वाली कि दुनिया इधर स उधर हो जाए हीरो जीतेगा—हीरोईन से मिलगा?

न० 2 मैं कहता हू आप चुप रहग या नहीं। वस हो कम टेंशन नहीं है मुझे।

न० 1 बड भाई स बात करन की तमीज नहीं है तुमम मैं एक एक को दख लूगा। मुझस बात करन की जरूरत नहीं है मैं किसी का भाई नहीं हू। भर लो अपनी-अपनी तिजोरिया, मत दना कोई मुझे दारु। (बडबडाते हुए बसुध हो जाता है। प्रकाश बुझ जाता है।)

दश्य 2

[प्रेरणा का कक्ष। प्रेरणा के साथ प्रवेश।]

प्रेरणा तुम लोग किसी काम के नहीं हो। इमरजन्सी म भी सरकार विरोधी नाटक हो जाते हैं और तुम्हें खबर तक नहीं होती। क्या खाक पत्रकारिता करत हो!

पत्रकार मैडम, आप तो बिलावजह खफा हो रही हैं। दशकों ने विपक्षी दलों का नाटक दखा है निहायत बकार था। (दर्शकों से) क्यों भाई लोग, ठीक कह रहा हू ना मैं? हाँ तो मडम मैंने पहले स ही दर्शकों म एस एस आलोचक बठा रख हैं जिन्होंने आज तक किसी नाटक को अच्छा कहा ही नहीं। अपनी कलम की ताकत से

य वढिया-स-वढिया नाटक का कूटा सावित कर सकते हैं। उनके नाटक का ता एसी धज्जिया उडायेंगे कि सात जन्मा तक नाटक करन का साचेंगे तक नही। (चापलूसी से)जानती है मैडम, नाटक का नाम क्या था ?

प्रेरणा (दात पीसते हुए) हरामी।

पत्रकार (खुश होकर) पाच हरामी।

प्ररणा मैं तुम लागा के लिए कह रही हू तुम सव-क-सव हरामी हा।

पत्रकार आप सीट पर हैं वडी हैं सिस्टर हैं, मरी मा है—गलती तो खर मुझस हा ही गई है थान का ही फोन कर दता ता क्या उनका नाटक हा जाता ?

[कवि का प्रवश]

प्रेरणा आप और यहा ?

कवि आपन वो कहावत तो सुनी ही हागी— जहा न पहुच रवि वहा पहुचे ह ह ह वस भी मेरा एक कदम हुजूर की चौखट पर ही रहता है।

प्रेरणा आपका पता है कि इन दिना क्या हो गया ?

कवि उसी के निवारण हेतु इस नाचीज ने आपके वार्तालाप म विघ्न पहुचाने का दुस्साहस किया है। मैं जानता हू कि हमम स ही किसी एक की लापरवाही स क्या हो गया लकिन आपने इगलिश और पालिटिक्ल साइस की वो कहावत भी जरूर सुनी हागी— 'ए चमचा इन नीड इज ए चमचा इनडीड ।

पत्रकार वो ता कोइ नई वाल नही है, चमचागिरी म आपका वल्ड रिकाड है।

कवि आपको काई एतराज है ?

पत्रकार भला मुझे क्या एतराज हो सकता है कविवर ? हम दोनो ता एक ही विरादरी के हैं।

कवि आपका गोत्र क्या है ?

पत्रकार आपकी राशि क्या है ?

प्रेरणा (चिढ़कर) आप लोग वातें करन क सिवा कुछ नही कर सकत।

पत्रकार जो कि राजनीति का गुरुमत्र है।

कवि क्योंकि मच पर अभी जनतत्र है।

प्ररणा चुप रहा ! विराधी अभी तक स्वतत्र है।

कवि-पत्रकार विरोधी की हम

प्रेरणा (कवि से) इमको भी

की ग्लानी में आप कब से कविताएँ करने लगे? खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलने लगा क्या? जाओ बाहर! (पत्रकार का प्रस्थान।)

(कवि से) और आप किस मर्ज की दवा हैं? बड़ा गुमान था न आपको अपनी कविताओं पर! मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि आप शृंगारिक कविताएँ करने के सिवा कुछ नहीं कर सकते। कुछ दुनियादारी की बातें आतीं नहीं चले आए हैं रंगमंच की राजनीति में।

कवि आप तो सरासर इल्जाम लगा रही हैं मैडम। मैं सच कहता हूँ मैंने आपके सिवा आज तक किसी के रूप की प्रशंसा नहीं की। आपने मुझे शृंगारिक कवि कहकर मेरी कोमल भावनाओं का खून कर दिया।

प्रेरणा आप बेवकूफ हैं निकम्मे हैं निकम्मे पड़े हैं आप। आप नहीं जानते कि राजनीति का क्षेत्र कितना जोखिम भरा है? आपकी हवा थी, आप जीत गए। अगले इलेक्शन में विरोधियों की आंधी चलेगी आंधी और तब देखिएगा जनता तब यह नहीं देखेगी कि आपने अपने घर-परिवार के लिए कुछ किया या नहीं दूध में से मक्खी की तरह निकाल फेंकेगी।

कवि (विवशता) मैं भी आखिर क्या करूँ मैडम? जब भी अपने क्षेत्र में जाता हूँ कितने ही आश्वासन देता हूँ। नाटक वालों के लिए हाल बनवा दूँगा कलाकारों का भावी भविष्य उज्ज्वल बना दूँगा। जुलूस में शामिल होने वाले अमन चैन और भीड़ जुटाने के लिए कितना रुपया तो विरोध के गुण्डों पर पानी की तरह बहाता हूँ। कभी-कभी तो जी में आता है छोड़ दूँ यह गोरखधंधा और लोगों की कुछ भलाई करूँ। दिल्ली में एक दुकान खोलूँ और लोगों की दुनियादारी बसाऊँ। चढ़ जाऊँ कुतुबमीनार पर और चीख चीख कर लोगों को बुलाऊँ—

> मिल तो लें मिल तो लें
> यहाँ रिश्ते-ही रिश्ते मिलते हैं
> ये दिल्ली है जहाँ वर-वधू सस्ते मिलते हैं
> फूटी कौड़ी से चार अंकों तक कमाने वाले
> सूर्पनखा को भी पद्मिनी बनाने वाले
> एक ढूँढो हजारों मिलते हैं
> ये दिल्ली है जहाँ वर-वधू सस्ते मिलते हैं

कुंवारी मम्मियां,
काले-कलूटे काले बचनर इडीज
ये सब यहां भाड़े में बहुत मिलते हैं
जहां इतना मिलता है वहां जोकर भी मिलते हैं
ये दिल्ली है
यहां का भाव सस्ता है
यदि आपकी हालत खस्ता है
तो आइए हमारे पास खान आई० ए० एस०
लंगड़े डाक्टर' बूढ़े इंजीनियर
शैतान 'कंडक्टर, बेईमान 'इंसपेक्टर
अंधे और बहरे मिनिस्टर मिलते हैं
इनके रेट रिजनेबल हैं
एम० ए०,' 'बी० ए०' तो खुले मिलते हैं
शादी तो ताश का एक खेल है
यहां जो भी मिलते हैं कहने पर दहेज मिलते हैं

प्रेरणा (कानों पर हाथ रखकर चीखते हुए) अब बस भी करो। हे भगवान, ये पागल कवि तो मुझे भी पागल बनाकर छोड़ेगा। (सयत होने का प्रयास करती हुई) कवि महोदय !

कवि जी।

प्रेरणा हमें कुछ करना चाहिए।

कवि जी अच्छा जी।

प्रेरणा हमें कुछ करना होगा।

कवि जी बहुत अच्छा जी।

प्रेरणा आपको तैयार रहना होगा।

कवि जी उससे भी अच्छा जी।

प्रेरणा आपको भाषण भी देना होगा।

कवि जी सबसे अच्छा जी।

प्रेरणा जी ! जी ! जी ! आप सुन भी रहे हैं जी ?

कवि जी, क्या कहा जी ?

प्रेरणा आज रात को आपको रंगकर्मियों के नाम संदेश देना होगा।

कवि जी दीन्हीं जी।

प्रेरणा (हंसते हुए) और अब आप जा सकते हैं।

कवि जी बाई बाई जी (प्रस्थान) बाय बाय जी।

[प्रकाश लुप्त हो जाता है]

दृश्य 3

[एक रिहर्सल। मंच पर एक स्त्री दहाड़ें मार कर रो रही है। नं० 3 और नं० 4 उसे और जोर से रोने को प्रेरित कर रहे हैं।]

स्त्री हाय मेरी लछमी ! चाय बनाने को गई थी मेरी बहू सपना, अब मैं दुनिया वालों को क्या मुंह दिखाऊंगी।

नं० 3 मां, तुम तो ऐसे रो रही हो जैसे बहू नहीं भिण्डी की सब्जी जल गई हो।

नं० 4 हां पप्पू की मम्मी ऐसे रोओगी तो लोगों को कैसे विश्वास होगा कि तुम अपनी बहू को कितना लाड करती थीं।

नं० 3 छाती पीटो मां।

स्त्री (छाती पीटती हुई) हाय-हाय, हाय मेरी बहू।

नं० 3 और जोर से मां और जोर से बेहोश हो जाओ।

स्त्री अरे तुम लोग भी तो चीखो चिल्लाओ ना नहीं तो लोग क्या कहेंगे ? अरे दूसरी शादी की खुशी अभी से मत मना बेटा, ले बेटा ले ! (एक शीशी देते हुए) थोड़ी-सी ग्लिसरीन आंखों में लगा ले (नं० 4) अजी सुनते हो ! (नं० 4 का ध्यान दूसरी तरफ है) अजी पप्पू के पापा सुनते हो आप भी लगा लो इससे आंसू बिल्कुल असली जैसे आते हैं। (तीनों पात्र जोर जोर से रोते हैं।)

[दो पात्रों का प्रवेश। ये दोनों इस परिवार के पड़ोसी हैं।]

नं० 1 सेठ जी घबराने की कोई बात नहीं है इस मोहल्ले की बात कभी बाहर नहीं निकली है।

नं० 2 अरे सत्रह नम्बर वाले बिहारी को ही ले लो दो बहू जला चुके हैं तीसरे की तयारी है।

नं० 1 तभी कल राशन में मिट्टी के तेल का भाव पूछ रहे थे।

नं० 2 अरे दूर क्या जाते हो, अपने सात नंबर वाले गोयल साहब की बहू जिसे जहर खिलाकर मार डाला था उन लोगों ने, सारे मुहल्ले ने गवाही दे दी—बिजली के तार से करंट लगते अपनी आंखों से देखा है।

स्त्री लेकिन मैं तो ईमान से कहती हूं हरीशचन्द्र भैया कि मेरी बहू तो साच्छात लछमी का अवतार थी लोगों का क्या, वे तो यही कहेंगे ना कि सास ससुर दुःख देते थे।

न० 2 और नहीं तो क्या सर पर बिठा लें अपनी बहुआ को ? कहा नहीं होती सास-बहू की लड़ाई फिर क्या कहेंगे लोग सास-ससुर के बारे में कुछ।

स्त्री य आप कह रहे हैं ना सत्यनारायण जी लेकिन दुनिया यही कहेगी कि दहेज के लोभियों ने एक अबला की जान ले ली।

न० 3 (रूमाल से अपनी आँखें पोंछकर जबरन रोनी आवाज बनाकर) मेरी फूल-सी सपना आज पहली बार अपने नाजुक-नाजुक पुचु पुचु हाथों से मेरे लिए काफी बनाने गई थी पहले मुझे पता होता कि स्टोव फट जायगा तो सपने में भी काफी पीने की बात नहीं सोचता। सपना मेरी फूल-सी सपना

सी न० 1 भूल जाओ बेटा भूल जाओ सब कुछ। भूल से भी यह मत बताना कि बहू की मौत स्टोव फट जाने से हुई यह बहाना बहुत पुराना हो गया।

स्त्री हाय राम! फिर क्या कहें, आप ही बताए ना सत्यनारायण जी।

न० 2 परलोक में पूर्व प्रेमी से पुनर्मिलन की पूर्व योजना।

न० 3 यह कैसे हो सकता है मेरी पत्नी चरित्र के मामले में तो सावित्री की भी नाक काटती थी।

स्त्री (दहाड़ते हुए) चोप्प! दिन भर घर में मैं रहती हूँ या तुम? वह लोगों कि मेरी आँख लगते ही किसिम किसिम के लोगों को घर बुलाती थी। डा० धनंजय सिंह के साथ बर्डमिंटन खेलती थी।

[एक वर्दीधारी सिपाही का प्रवेश। वह कुछ सूंघने की कोशिश कर रहा है। चलते वक्त थोड़ा लंगड़ाता है सीधा खड़ा नहीं हो सकता।]

सिपाही (डंडा हवा में लहराता हुआ) लाश कहाँ है?

ी न० 3-4 लाश! कौन-सी लाश? किसकी लाश?

सिपाही अरे वही लाश जिसकी बदबू के कारण मुझसे खड़ा नहीं हुआ जा रहा है। वही लाश जिसके लिए तुम रो धो रही थी। वही लाश जिसको ठिकाने लगाने के लिए ये दोनों तुम्हारी मदद के लिए आये थे। (दोनों पड़ोसी भाग जाते हैं सिपाही पीछा करता है किन्तु पकड़ नहीं पाता है। हाँफकर) बीबी के साथ सात वक्त भी बिना वारंट के अंदर कर दूंगा साला पुलिस डिपाट को चकमा देता है। (स्त्री से) बुढ़िया लाश मेरे हवाले कर दे।

स्त्री कौन-सी लाश?

सिपाही मैं कुछ नहीं सुनना चाहता मुझे लाश चाहिए। 'हरिअप'।

स्त्री थानदार साहब आपको गलतफहमी हुई है।

सिपाही हवलदार सतापी लाल का 'गलत फेमिली हा हो नहीं सकता। बात तू रो रही थी या नहीं।

स्त्री (हकलाकर) वो रोना धोना। वो तो एसा है थानदार जी कि मेरी कमर में जोरों का दर्द उठ गया था, देखिए ना अब तक रोना आ रहा है। (कराहते हुए) हाय-हाय हाय मेरी कमर। हे भगवान, उठा ले अब।

सिपाही बहुत हो गया नाटक बुढ़िया एक बेंत लगाया ना तेरी कम्मर में तो सच्ची का दर्द उठ जायगा तेरी कम्मर में।

स्त्री (न० 3 से) अरे खम्भ-खड़ा आसू क्या बहा रहा है? जा कुछ मिठाई विठाई ला थानेदार साहब के लिए।

सिपाही अपने बुड्ढे को खिला मिठाई, डाइबिटिज' में सूअर नहीं थाने हम। (न० 4 को इंगित करते हुए) और तू क्या दांत निकार रहा है, सूअर नहीं तो शूगर होगा मैंने तेरी तरह अग्रजी नहीं पढ़ी— पच्चीस हजार देकर भर्ती हुआ हू। (स्त्री को) समझा दे अपने बुड्ढे को लस्सी ने आय अब तो

स्त्री अभी लाती हू लस्सी आपके लिए (जाने लगती है।)

सिपाही सुना आटी जी, उसमें चीनी मत डालना। (स्त्री चली जाती है। सिपाही न० 4 को ऊपर से नीचे तक निहारता है) देखिए आपकी भलाई के लिए कह रहा हू बात जैसे-जैसे ऊपर पहुचेगी रेट बढ़ता ही जायगा। आपको तो पता ही होगा कि अब तो कभी-कभी पैसे रखे रह जाते हैं और सजा हो जाती है। पता नहीं किस आफिस में कौन-सा ऐसा अफसर निकल जाय जो अव्वल तो पैसा ही न ले और लेकर भी दगा दे जाय।

न० 4 क्या ऐसे अफसर भी होते हैं जो पैसा ही नहीं लेते।

सिपाही मेरी जानकारी में तो एक भी नहीं है लेकिन क्या पता कोई हो बेवकूफ राजा हरिश्चन्द्र।

न० 4 लेकिन मुझे क्या करना होगा?

सिपाही सारा मामला रफा-दफा कर दूगा पोस्टमाटम के पहले ही लाश ऐसी जगह पहुचा दी जाएगी कि लड़की वाले के फरिश्ते भी नहीं ढूंढ पाएंगे। आप तो जानते ही हैं कि नीचे से लेकर ऊपर तक सबों का हिस्सा होता है। आप शक्ल सूरत में जेंटलमैन दिखते हैं आपसे ह्यूमिलिटी के नाते ज्यादा नहीं लूगा।

न॰ 4 फिर भी आप साफ-साफ कह, तब ना।

सिपाही सब काम हो जायगा पूरे पन्द्रह लगेंगे।

न॰ 4 (आश्चय से) क्या, पन्द्रह सौ ?

सिपाही जी नही पन्द्रह हजार। रुपये का 'डिवल्युएशन' हो गया है। पन्द्रह सौ ? पन्द्रह सौ तो हम किसी भी छोटे मोटे चोर उचक्के से बिना किसी अपराध के वसूल लेते हैं। 25 साल की जवान औरत को जला डाला है किसी साप छछूदर को नही।

[न 3, दोनो पडोसियो और स्त्री का हसते हुए प्रवश]

स्त्री (पाच रुपये का नोट देते हुए) सिपाही जी य लो अपनी बख्शीश खूब मजा आया जब कभी अपनी बहू को जलाऊगी ना तब तुम्ह ही याद करूगी।

सिपाही क्या मतवल ? मैं पूछता हू क्या मतवल ?

न॰ 3 मतलब य श्रीमान कि हमारे अच्छे भले रिहसल मे हुजूर ने पधार कर रिहसल की शोभा म चार चाद लगा दिया सीन म जान आ गइ।

[स्त्री, न॰ 3 न॰ 4 और दोनो पडोसी ठहाके लगाते ह। बौखलाया हुआ सिपाही मच पर से भागता है थोडी देर बाद वापस आकर स्त्री से।]

सिपाही द दो फिर। पाच वाला था ना आपके पास। (स्त्री सिपाही को पाच का नोट देता है। शेष पात्र हसते ह।) ठीक है ठीक है। रात के समय रिहसल करते हो खाकी वर्दी की कसम लूट केस मे ना फसा दिया तो हवलदार सतोषी लाल नाम नही। (सभी पात्र जोर से ठहाके लगाते ह। न॰ 5 का गुस्से मे प्रवेश। एक खास अदाज में स्टूल पर पर रखकर खडा हो जाता है।

न॰ 5 (भारी आवाज) बन्द करो ये ठहाके। 'आइ स स्टाप दिस न्यूसेन्स' सभी पात्र सहम कर चुप हो जाते ह लेकिन न॰ 3 हसता रहता है। 'आउट गट आउट फ्राम हियर इफ यू का ट एक्ट प्रापरली'। देखो प्रकाश रिहसल का मतलब होता है रिहसल और रिलक्स' का मतलब होता है रिलक्स। एण्ड इट इज द टाइम फार वर्क एण्ड नाट फार रिलक्सेसन। डू यू गट माई पाइट, अण्डरस्टेण्ड। (विराम) सो डियर एक्टर्स, लेट अस प्रोसीड टू क्लाइमेक्स। ओ॰के॰?

शेष पात्र आ० के० सर।

न० 5 वेल माइ वॉय। हा तो, मिस वर्मा स्टार्ट वीपिंग, मगर वगैर नहीं जस आप पहले रो रही थीं वात क्यरएली।

न० 3 चोपडा साहब!

न० 5 डोण्ट डिस्टर्ब मी हा तो मिस वर्मा, वीप नाउ दिस (जनाना आवाज) हाय लछमी लछमी माई डार्लिंग सारी! लछमी माई वह। (स्त्री से) आगे क्या है?

न० 3 चोपडा साहब वहोत देर हो गई है आप दस दिन बाद 'एग्जाम' हैं मैं जाऊ? नहीं तो पापा

न० 5 डाण्ट डिस्टर्ब मी प्रकाश! तुमन काम के प्रति धन भर की सिन्सियरिटी नही है डिवोशन नहीं है। हर वक्त एग्जाम के बारे म सोचते रहते हो। दिस थियटर इज मोर इम्पोर्टेन्ट देन योर ब्लडी एग्जामिनशन।

न० 3 सॉरी सर!

न० 5 हां तो (स्त्री से) क्या नाम है आपका मिस वर्मा। मिस वर्मा, डू यू हियर मी?

स्त्री ओह! आय'म टू मच टायर्ड टुड मिस्टर चोपडा, आय म नाट इन मूड टू वर्क मोर।

न० 5 हू। (विराम) वही मैं सोच रहा हू कि आज काम म मजा क्या नहीं आ रहा है? ठीक है मिस वर्मा आप थक गई हो तो रिहर्सल बन्द किया जा सकता है। और सुनो प्रकाश 'एग्जामिनशन की प्रिपरेशन भी तो जरूरी है ना आज तुम यही करो लेकिन कल टाइम से दो घंटे पहले आ जाना। कदियों की ड्रेस मागने सेण्ट्रल जेल चलना है।

[प्रकाश बुझ जाता है।]

दृश्य 4

[मंच पर कलाकार नियोजन अभियान का नेतृत्व करते हुए पत्रकार और कवि। जगह जगह कलाकार नियोजन की तख्तियाँ दिख जाती है जिन पर कला की खुशहाली के लिए कलाकार नियोजन' अगला नाटक अभी नहीं, एक के बाद कभी नहीं,

'अपने पास के कला दफ्तर से कलाकार नियोजन की सलाह मुफ्त में' कलाकार नियोजन के अचूक नुस्खे—50 पसे मे तीन हर जगह उपलब्ध ह'।]

कवि मुल्क म कला के विकास के लिए बहुत कुछ किया जा रहा है, लकिन प्रश्न यह उठता है कि हम फिरभी इस मामले म अन्य मुल्का से पीछे क्या है ?

पत्रकार तो इसके पीछे है दिन प्रति दिन हमारी बढ़ती हुइ कलाकार सख्या।

कवि इसलिए हमारी सभापति महोदया न कला के विकास के लिए मुल्क की कलात्मक सस्थाओ को निर्देश दिया है कि व कलाकार नियोजन की तरफ ध्यान दें। जो कला सस्था साल म दो या तीन स अधिक कलाकार पदा करगी उसकी सहायता मान्यता रद्द कर दी जाएगी और एसी सस्थाओ पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाएगा।

पत्रकार साथ ही व निर्देशक जो सरकारी आदेश की अवहलना कर दिन रात ज्यादा-स-ज्यादा कलाकार पदा करन म लगे रहगे, उनकी कलाबदी कर दी जाएगी।

कवि और जो महानुभाव अपनी इच्छा से कलाबन्दी करवा लेंगे उन्ह आर्थिक सहायता दी जाएगी।

पत्रकार और उन पैसा का कोई हिसाब भी नही लिया जाएगा। सस्था के कलाकार उन पसो का दारू पीयें या दूध, हम कोइ लना-देना नही रहगा।

कवि हम तो चाहत ही हैं कि हिन्दी रगमच की खूब तरक्की हो, बचारे कलाकार लोग फोकट म रात दिन मारे मारे फिरत है नीद म भी कुछ-न-कुछ बडबडात रहत हैं। एक नाटक स उन्ह कम से-कम चाय-पान का उधार चुकाने लायक आमदनी तो होनी ही चाहिए।

पत्रकार हमारे मेनीफेस्टो म साफ-साफ लिखा था कि शहर के अच्छे बुरे, नये-पुराने सभी कलाकारो के चाय-पान सिगरट के उधार चुका दिए जाएगे और एस दुकानदारो को सख्त ताकीद दे दी जाएगी कि भविष्य म यदि ऐसे कलाकारो के साथ लन-देन रखा गया तो हमारी अकादमी उसकी देनदार नही होगी।

कवि लकिन हमारी विरोधी पार्टियो की मेहरबानी स हमारी यह योजना भी खटाई म पड गई उनके अनुसार शहर के कलाकारो

की सख्या बरोजगार की सख्या को भी पार कर गई है।

पत्रकार अकादमी किसी भी ऐसे आदमी या औरत को कलाकार या कलाकारिणी मानने से स्पष्ट इनकार करती है जो 1983 के बाद इस धध म आए हैं।

कवि एक महत्वपूण सूचना—इस वष जो सरकारी नाट्य समारोह आयोजित किया जा रहा है उसम भाग लने के लिए बाहर की मशहूर नौटकिया तो आ ही रही हैं साथ ही उन तीन नत्यागनाओ को भी विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया है जिनके नामा का फसला शहर के बुद्धिजीविया द्वारा गुप्त मतदान के जरिए किया गया है। उनम स एक का नाम तो

पत्रकार (अति प्रसन्नता से) मिस हलन चिनाय को पिछल साल एक फिल्मी गीत राजा दिल माग चवन्नी उछाल क पर यहा क एक भूतपूव राजा ने अपने बगल पर बुलाकर पाच हजार रुपय और साढ़े तीन तोले की चेन स सम्मानित किया था।

पत्रकार आप पूछेंगे नाटक म नत्य क्या भला? तो ब धुओ नाटक और नत्य मिलकर होता है लोकनाटक—लोक मीन्स फोक और नाटक मीन्स ड्रामा एण्ड फोकड्रामा मीन्स लोकनाटक। सरकार आगे भी लोकशली को जीवित रखने का प्रयास इसी तरह करती रहेगी।

कवि इस समारोह की सफलता का दायित्व आप सबा पर ही है। इस शहर की एक गरिमा रही है आतिथ्य की एक परम्परा रही है।

पत्रकार रजिस्टड कलाकार अपना पास कभी भी कार्यालय से कार्यालय समय म प्राप्त कर सकते हैं।

कवि और शेष लोगा के लिए मात्र पच्चीस रुपये का टिकट है जो ब्लक मे खुलआम बिक रहा है। (पत्रकार से) तो पत्रकार बन्धु! (कोने मे ले जाकर)

पत्रकार फरमाइए कविवर!

कवि लोगो पर कुछ-न-कुछ असर तो पडा ही है।

पत्रकार अजी लोकनाटका पर इतनी अच्छी बहस इसस पहले कभी नही हुई।

कवि रगमच म राजनीति को अच्छी तरह घुल मिल जान दो फिर देखना एक-से एक भयकर बहसें होगी।

पत्रकार चलिए यह तो सिद्ध हो गया कि हम

कवि निरे निठल्ले नही ह।

[कवि और पत्रकार का प्रस्थान। अभिनेत्री का प्रवेश। ढेर सारी मुस्कान के साथ उदघोषणा करती है।]

अभिनेत्री अभी आप देख रहे थे कायक्रम—'लोकनाटक—दशा और दिशा। हम अपने दशको को बता दें कि देर रात गए नाटको की शृंखला म आज रात हम अपन दशको को दिखायेंगे नाटक— इश्क दी मारी—फूलकुमारी', जिसे हमने शत्रु हाउस स रिकाड किया है। इस नाटक के लेखक हैं और इसम भाग लेन वाले मुख्य कलाकार हैं और इस नाटक की कुल अवधि है ढाइ घण्ट अर्थात ढाई सौ मिनट। (मच के एक किनारे से एक लड़का एक तख्ती दिखाता है जिसमे लिखा है एक घण्टा = 60 मिनट)

अभिनेत्री क्षमा कीजिएगा, ढाई घण्टे अर्थात एक सौ पचास मिनट। (गला खखारकर) हम खेद है कि कुछ तकनीकी खराबी के कारण आप इस उदघोषणा के कुछ शब्द नही सुन पाए। (अतिरिक्त मुस्कान और अदा के साथ) अब समय है सिंधी म समाचारो का क्षमा कीजिएगा हिंदी म समाचारो का।)

[घडी की टिक टिक के साथ समाचारवाचक का प्रवेश]

समाचार वा० आज के रग समाचारो म थियेटरकर्मियो के जीवन-स्तर को सुधारने के लिए ढेर सारी सरकारी योजनाए आगामी रग समारोह के लिए मुख्य नतकी मिस हेलन चिनाय को आमत्रण अखिल भारतीय बहुभाषी नाटक प्रतियोगिता के परिणामो को न्यायालय म चुनौती तथा दूरदशन ने दशक जुटाने के एक मुकाबले म हिंदी रगमच को धूल चटा दी। अब समाचार विस्तार म

न० 3 भया न्यूज भया न्यूज आ रहा है चैनल बदल दो ना चित्रहार आएगा।

[एक पात्र दूसरे पात्र का कान मरोडकर चनल बदलने का अभिनय करता है।
रग सस्थाए इस स्थल पर अपने विज्ञापनदाताओं का कोई मनोरजक विज्ञापन दे सकती ह।
प्रकाश बुझ जाता है।]

दृश्य 5

[रंगकर्मी न० 1 2 3 किसी पार्क में]

न० 2 ज़िन्दगी नाटक है प्यार।

न० 1 और नाटक नखड़ा है प्यार।

न० 2 क्यों आज क्या कह दिया तेरी छम्मक छल्लो ने ?

न० 3 नहीं यार मैं तेरे से ही पूछता हूँ जिन लोगों की बात को हम मर-खपकर सारी दुनिया के सामने रखते हैं वही साले हमें किसी काम का नहीं समझते हैं। हट साला।

न० 3 (न० 2 से) पन्त इसको खुराक दे यार हराम में शान की बातें सुनने की बड़ी तमन्ना रहती है।

न० 2 तुझे पीना है तो तू बोल ना।

न० 3 अब जो समय ले यार। दो घटे से जी मिचला रहा है। बड़ी तलब म०सूस हो रहा है साली। गुस्सा आता है यार उस चोपड़ा के बच्चे पर। खुद तो ठाठ से सिगरेट पर सिगरेट फूकता रहता है और हम (नकल करता हुआ) दखो प्रकाश रिहर्सल का मतलब होता है रिहर्सल और रिलेक्स का मतलब है रिलक्स, एण्ड इट इज द टाइम फार रिहर्सल नाट फार रिलक्सेशन डू यू गेट माई प्वाइंट अण्डरस्टण्ड (आवाज को अत्यधिक कोमल बनाकर) हां तो मिस वर्मा आप थक गई हो तो रिहर्सल बन्द कर दिया जाए। (न० 2 हंसता है।)

न० 1 छोड़ यार क्या बोर करता है भाड़ने दो बचारे को फिलासफी निर्देशक है वो।

न० 3 भाड़ में गया निर्देशक ! रिहर्सल के लिए 8 बाई 5 का बिना बत्ती का कमरा दे दिया और वर्मा की बेटी को बहका-फुसलाकर राजी कर लिया तो वह लाइरक्टर हो गया और हम जो साले उससे पांच साल पहले से थियेटर कर रहे हैं कुछ भी नहीं ! थोड़ी दाढ़ी बढा ली, कंधे पर एक सस्ता-सा थैला टांग लिया, दो चार मांगी-चुराई साहित्यिक किताबें रख ली उसमें तो बन गया वो निर्देशक।

न० 2 तू घाघ है, साला घाघ। उसी वर्मा पर इम्प्रेशन मारने के लिए पूरे रिहर्सल में चोपड़ा साहब चोपड़ा साहब की रट भी तू ही लगाता है।

न० 3 अपन नहा लगान किसी को तेल, रोल छोटा दो या बडा, उसी म जी लगाते है ।

न० 1 छोन यार, किस लफडे म पड गए तुम सब के-सब, दे कुछ छुट्टे पस द, सिगरेट लकर आता हू ।

न० 2 (नकारात्मक इरादे से सिर हिलता है।)

न० 1 ला, नाट ही ला, बाकी लौटा दूगा ।

न० 2 अर जब छुट्टे नही हैं तो रुपया कहा से आएगा। सारी जेबें तो टटोल चुका, अब क्या अण्डरवियर म हाथ डालेगा ? जा बाबा जी स कहियो कि रेडियो आर्टिस्ट शर्मा जी जो हैं ना नाटक वाले, आज उनका 'चेक' 'कैश नहीं हो सका, कल सुबह ही पहले का सारा हिसाब कर जायेंगे, अभी दो-तीन विल्स फिल्टर और दे दीजिए।

[न० 4 का पान चबाते हुए प्रवेश]

न० 4 और एक 300 न० जर्दे का पान।

न० 1 पेमेन्ट अकल जी करेंगे तरे ।

न० 4 (जेब से निकालकर रुमाल दिखाता है।) बेशक। यदि आटी जी की मेहरबानी रही तो पमेन्ट बाकायदा अकल जी ही करेंगे।

न० 1 तुझे कहा मिल गई वो ?

न० 4 सब्जी मण्डी आई थी मुझे देखते ही इशारे से बुलाकर कहने लगी सनी को बुला सकते हैं आप?' मैंने कहा— जी कभी जोखिम का काम किया नही है ना इसलिए डर-सा लगता है ।' कहने लगी— रहने दीजिए फिर, कहीं उनको कुछ न हो जाए। आप इतना करिए किसी भी तरह उनको मेरा यह रूमाल और खत पहुचा दीजिए, दे देंगे ना उनको प्लीज ।

न० 1 (न० 4 को बाहों मे भरकर चूमते हुए) यू आर ग्रेट माई डार्लिंग आय म वेरी ग्रेटफुल टू यू।

न० 4 ऐसे नही बेटे, पहले मरा पान ला ।

न० 1 पान तो क्या चीज है यार तेरे ऊपर तो जान कुर्बान है।

न० 4 जान तो खर लूगा ही पहले पान तो खिला।

न० 1 ला यार प्रकाश दियो पाच का नोट। अगली बार पिताजी की तनख्वाह मिली तो लौटा दूगा ।

न० 3 अजीब मजाक करता है यार कल से पचास बार कह चुका हू कि सरदारनी ने ट्यूशन के पसे नही दिये हैं नही दिये हैं **और तू है** कि साठ बार उधार माग चुका है ।

दृश्य 5

[रंगकर्मी न० 1 2 3 किसी पार्क मे]

न० 2 ज़िन्दगी नाटक है प्यारे।

न० 1 और नाटक लफड़ा है प्यारे।

न० 2 क्या आज क्या कह दिया तेरी छम्मक छल्लो ने ?

न० 3 नही यार मैं तेरे से ही पूछता हूं जिन लोगो की बात को हम मर-खपकर सारी दुनिया के सामने रखते हैं वही साले हम किसी काम का नही समझते हैं। हट साला।

न० 3 (न० 2 से) पहले इसकी खुराक दे यार हराम म पान की बातें सुनने को बडी लगी रहती है।

न० 2 तुझे पीना है तो तू बात ना।

न० 3 अब जो समझ ले यार। दो घंटे से जी मिचला रहा है। बडी तलब म०सूस हो रही है साली। गुस्सा आता है यार उस चोपडा के बच्चे पर। खुद तो ठाठ से सिगरेट पर सिगरेट फूंकता रहता है और हम (नकल करता हुआ) देखो प्रकाश, रिहसल का मतलब होता है रिहसल और रिलक्स का मतलब है रिलेक्स, एण्ड इट इज द टाइम फार रिहसल नाट फार रिलेक्शेसन डू यू गेट माई प्वाइट अण्डरस्टेण्ड! (आवाज को अत्यधिक कोमल बनाकर) हां तो मिस वर्मा आप थक गई हो तो रिहसल बन्द कर दिया जाए। (न० 2 हसता है।)

न० 1 छोड यार क्या बोर करता है झाटने दो बचारे को फिलासफी निर्देशक है वो।

न० 3 भाड म गया निर्देशक! रिहसल के लिए 8 बाई 5 का बिना बत्ती का कमरा दे दिया और वर्मा की बेटी को बहका फुसलाकर राजी कर लिया तो वह डाइरेक्टर हो गया और हम जो साले उससे पाच साल पहले से थियेटर कर रहे हैं कुछ भी नही! थोडी दाढी बढा ली कधे पर एक सस्ता-सा थला टाग लिया, दो चार मागी चुराई साहित्यिक किताबें रख ली उसम तो बन गया वो निर्देशक।

न० 2 तू घाघ है साला घाघ। उसी वर्मा पर इम्प्रेशन मारने के लिए पूरे रिहसल म चोपडा साहब चोपडा साहब की रट भी तू ही लगाता है।

न० 3 अपन नहीं लगाते किसी को तेल, रोल छोटा दो या बड़ा, उसी में जी लगाते है।

न० 1 छोड़ यार, किस लफड़े में पड़ गए तुम सब के सब, दे कुछ छुट्टे पैसे दे, सिगरेट लेकर आता हूं।

न० 2 (नकारात्मक इरादे से सिर हिलता है।)

न० 1 ला, नोट ही ला, बाकी लौटा दूंगा।

न० 2 अरे, जब छुट्टे नहीं हैं तो रुपया कहा से आएगा। सारी जेबें तो टटोल चुका, अब क्या अण्डरवियर में हाथ डालेगा? जा बाबा जी से कहियो कि रेडियो आर्टिस्ट शर्मा जी जो हैं ना नाटक वाले, आज उनका चेक 'कैश' नहीं हो सका कल सुबह ही पहले का सारा हिसाब कर जायेंगे, अभी दो-तीन विल्स फिल्टर और दे दीजिए।

[न० 4 का पान चबाते हुए प्रवेश]

न० 4 और एक 300 न० जर्दे का पान।

न० 1 पेमेन्ट अक्ल जी करेंगे तेरे।

न० 4 (जेब से निकालकर रुमाल दिखाता है।) बेशक। यदि आटी जी की मेहरबानी रही तो पेमेन्ट बाकायदा अक्ल जी ही करेंगे।

न० 1 तुझे कहां मिल गई वो?

न० 4 सब्जी मण्डी आई थी मुझे देखते ही इशारे से बुलाकर कहने लगी, सती को बुला सकते हैं आप? मैंने कहा— जी, कभी जोखिम का काम किया नहीं है ना इसलिए डर-सा लगता है।' कहने लगी— रहने दीजिए फिर कहीं उनका कुछ न हो जाए। आप इतना करिए किसी भी तरह उनको मेरा यह रुमाल और खत पहुंचा दीजिए, दे देंगे ना उनको प्लीज।'

न० 1 (न० 4 को बाहों में भरकर चूमते हुए) यू आर ग्रेट माई डार्लिंग, आय'म वेरी ग्रेटफुल टू यू।

न० 4 ऐसे नहीं बेटे पहले मेरा पान ला।

न० 1 पान तो क्या चीज है यार तेरे ऊपर तो जान कुर्बान है।

न० 4 जान तो खैर लूंगा ही पहले पान तो खिला।

न० 1 ला यार प्रकाश दियो पांच का नोट। अगली बार पिताजी की तनख्वाह मिली तो लौटा दूंगा।

न० 3 अजीब मजाक करता है यार कम से पचास बार कह चुका हूं कि सरदारनी ने ट्यूशन के पैसे नहीं दिये हैं, नहीं दिये हैं और तू है कि साठ बार उधार मांग चुका है।

न० 2 तू जा भी यार बाबाजी से कहियो कि रेडियो आर्टिस्ट शर्मा जी

न० 1 रेडियो आर्टिस्ट शर्माजी की ऐसी-तसी लाग-बाग साले छोकरियो का झागा दत हैं और तू बुड्ढो तक को नही बख्शता।

न० 2 नही यार मैंने कुछ नही किया—उसने एक दिन गलती से युववाणी म मेरी कोई कविता सुन ली रे तब से मुझे बडा भारी कलाकार समझता है। तू जा, नही दे ना सिगरेट तो मेरा नाम बदल देना।

[न० 2 न० 1 को जबरन धक्का देकर बाहर भेज देता है।]

न० 3 (न 4 से) क्यो कसी है रे मुग्गे जसी नाक और हिरणी जसी आख वाली!

न० 4 महाबकवास। अरे उसमे तो सुपीरियर' तरी मोटी वाली है यार।

न० 3 अच्छा साले मेरी वाली तेरे को मोटी दिखती है—जानता भी है फीचर किस कहते है?

न० 2 अरे प्रकाश तेरी वाली का मुकाबला भला हो सकता है किसी से! अभी ता बस तू य सुन ले कि क्या लिखा है उस मुर्गी ने हमारे मुर्गे को। (न० 4 चिट्ठी न० 2 को देता है।)

[न० 2 पढ़ना शुरू करता है]

सन्नी मेरे मेरे सन्नी।

अच्छा ही किया जो तुमने मेरी गली म आना छोड दिया, भया की जेब म आजकल रामपुरी चाकू रहता है पापा स पसे मागकर खरीदकर लाया है। कल मुझसे कह रहा था उस श्रद्धानद कुत्ते की छाती म पल दूगा अगर कभी उसकी आर नजर उठाकर भी देखा तो। कहता है साले भडवे को नाटक करना भुला नही दिया तो दुजन सिंह नाम नही। रात भर आवारा लोगो के साथ सिगरेटें फूकता है और दिन म साइकिल की घटी बजाता हुआ मेरी गली का चक्कर लगाता है कुत्ता! वह तुमको और भी गदी गन्दी—बहुत गदी गाला द रहा था जो मैं तुम्ह चिट्ठी म तो हरगिज नही लिख सकती।

न० 4 (न० 2 से) एक मिनट रुकना। (दशकों से) हम आवारा हैं क्योकि रात को रिहसल करते है और जनाब दुजन सिंह जो दो बार चरस बेचने के जुर्म म और एक बार लडकिया छेड़ने के चक्कर मे लाल हवेली देख आये हैं।

न० 3 लडकिया छेन्ना अब बहुत बुरा काम नही रह गया है दुजन सिह तो वीमन कॉलिज क सामने छेडा करत हैं हमार एक मिनिस्टर साहब तो विन्श जाकर भी छेड आय हैं।

न० 4 तू पढ यार चिटठी, इसकी तो आदत है अखवार म एसी-एमी खबरें पढन की।

न० 3 सात ताग राजाना सकडा बलात्कार कर गुजरत ह और तुझे लडकिया छिन जाने का इतना दुख हो रहा है।

न० 4 मैंने कहा ना कि तू चिटठी पढ वर्ना यह तो बक-बक करता ही रहेगा।

न० 2 (फिर पत्र पढना शुरु करता है।)

क्या तुम नाटक करना नही छाड सकत ? मुझे भी यही लगता है कि सब मुसीबता की जड हा यह नाटक है। तुम भी क्या नही भया की तरह कुछ कमात धमात हो ? कोई काम करो लकिन कमाओ। आखिर मर मम्मी-पापा क भी कुछ अरमान हुगि, कुछ ता साचो। क्या यही तुम्हारा भविष्य है ? इसस क्या फायदा हो रहा है तुम्ह ? तुम लोग कहा करते हो कि हम समाज का भला करते हैं लेकिन मुझे तो लगता है कि जब तुम अपना ही भला नही कर सकत हो तो समाज का क्या खाक भला हागा। मर प्यारे सनी भगवान न कर तुम्ह कुछ हो वर्ना मैं शादी क पहल ही विधवा हा जाऊंगी। मैं तो यह नही जानती कि तुम जा य काम कर रहे हो वह अच्छा है या बुरा लेकिन जब इतने सार लाग इस बुरा कह रहे हैं ता तुम्ह मान लेना चाहिए।

तुम्ह एक बात बताऊ, जिस मन्दिर के पीछे हम मिला करते थे ना, उसके पुजारी जी इन दिना रोज मुझस मिला करते हैं। अरे वही जिन्होंने एक बार हम कमरा दिया था उन्हान कहा है कि बेटी सतोपी मा का व्रत रखो, सब ठीक हो जायेगा। अगल शुक्रवार स सतोपी मा का व्रत शुरू करूगी उद्यापन तभी करूगी जब तुम नाटक छोड दोग। तुम रोज बडी नाली के पास मेरा इतजार करना, मैं कोई न कोइ बहाना बनाकर आ जाया करूगी। और हा तुमने इन दिना छीट वाली बुशट पहनना क्या छाड दिया है मैंन तुम्ह कितनी कहा है कि उन कपडा म तुम बिलकुल सलमान खान लगते हा। मैं भी वही सीना वाला कुर्ता पहनूगी जिसम मैं मुगाता बिालाना दिखती हू।

मम्मी को शायद शक होने लगा है कि मैं पढाई करने के बहाने तुम्हे चिटठी लिख रही हू, तभी तीन बार पूछ गई हैं कि 'कोई कागज तो नही लिख रही है ना उस श्रद्धए का वह उठते-बठते तुम्हारा ही श्राद्ध करती रहती है अच्छा ही है जा वाला अक्षर भस बराबर है नहो तो समझ जाती कि हामवक नही लववक कर रही हू।

अत म एक बात और तुम लिख कर दा कि कब छाड रह हो तुम नाटक और हा इन दिना जरा सतक रहना—कुत्ते सूघत फिर रहे है लकिन किमी स डरना भी मत— जब प्यार किया ता डरना क्या? तुम्हारी अपनी— सोनी

[न० 1 का तेजी से प्रवेश]

न० 1 यार, बाबा बहुत रद्दी आदमी है यार।

न० 2 क्या क्या हो गया?

न० 1 दस आदमिया के सामन बइज्जती कर दी और क्या जान लेता?

न० 2 तूने मरा नाम नही बताया होगा!

न० 1 तेर नाम के कारण ही तो सब बखडा हुआ। मैं गया। सिगरट सुलगाई और मैंने कहा बाबा जी एक पान 300 न० का और दो वित्स फिल्टर और दे दीजिए वा रंडिया आर्टिस्ट शर्मा जी जो है ना बस इतना सुनना था कि भटक उठा कहन लगा, आपको किसी जी ने भेजा हो पसा दे दो और ल जाओ मैंने कहा बाबा जी इतना ता ताव मत खाओ उधार ही तो माग रहा हू। कोई भीख तो माग नही रहा। बाबा जी की आखें लाल हो गइ कहने लगा—और भीख मागना क्या होता है, जबदस्ती सडे गले नाटका की टिकटें बेच जाते हो। मुझे भी गुस्सा आ गया। मैंने भा कह दिया, बाबा जी क्या मुह खुलवाते हो—आज तक ता कभी टिकट के पसे दिए नही और उल्टा तोहमत हम पर ही लगाते हो कि हम जबदस्ती टिकट दे जाते है तुम्हें। टिकट खरीदन की नीयत रहती है कभी तुम्हारी? तुम पाच रुपये की सिनेमा की टिकट को पचास रुपये मे ब्लक म खरीदकर देखने वाले लोग ना तो हमारा नाटक देख सकते हो और ना ही समझ सकते हो।

पास ही एक दढियल पान चबा रहा था पीक फेंककर बोला, दिन भर के थके, मादे लोग मनोरजन चाहत हैं मनोरजन। आप लोगा का ऊलजलूल प्रयोग नही। मैंने कहा—'नही जनाब आप शौक से ब्लक म टिकटें लेकर कूल्हे मटकाने और कमर नचाने